ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

ॐ

श्री सत्नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका



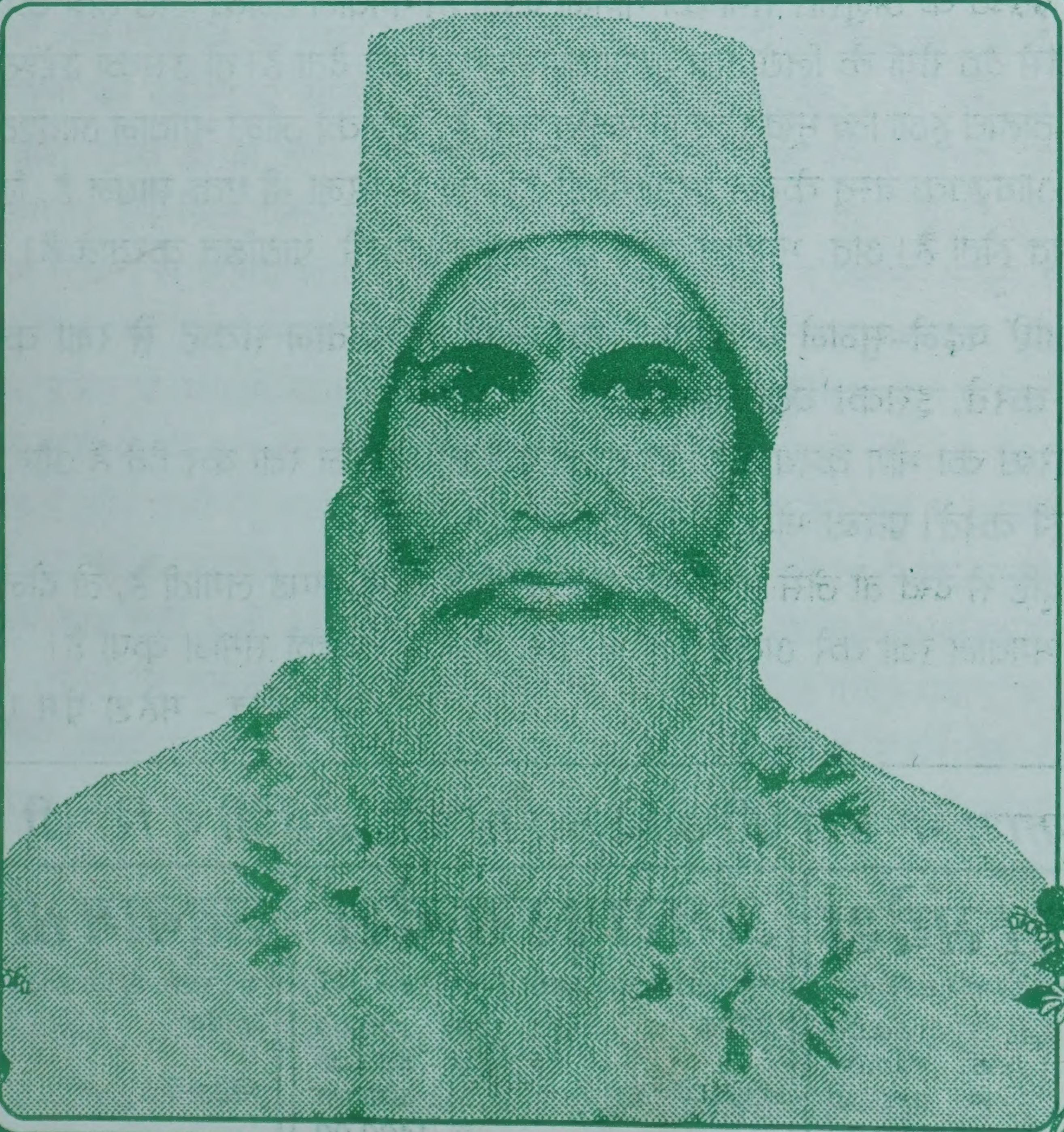
15 जनवरी 2003

वार्षिक शुल्क : रु. 50 (भारतवर्ष में)
वार्षिक शुल्क : रु. 350 (विदेश में)

वर्ष 23 अंक 3

प्रेम प्रकाश संदेश

संस्थापक : सदगुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज



आचार्य सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज

ज्ञानोपयोगी प्रश्नोत्तर

प्र. कई साधक भगवान के लिये रोते है, व्याकुल होते है, फिर भी उनको भगवान क्यों नहीं मिलते ?

उ. उनके भीतर भगवान के सिवाय अन्य (सुख:, आराम, मान-बड़ाई एवं सांसारिक पदार्थ) आदि की चाहत रहती है। अन्य वस्तु में व्यक्ति की महता और प्रियता रहती है। अत: भगवान के लिये रोना तो तात्कालिक होता है, फिर वही की वही स्थिति हो जाती है। सिर्फ मन में एक भगवान की चाहना होनी चाहिये "जहाँ चाह है वही राह होती है" केवल मन परमात्म चिन्तन से जुड़ा रहे। वह सदैव साधना में लगा रहे। सांसारिक पदार्थों को छोड़ परमात्मा की चाहना करोगे तो भगवान की प्राप्ति हो जायेगी।

प्र. **जब भगवान सबका पालन-पोषण करते है तो फिर मनुष्य भूखे क्यों मरते है ?**

उ. "ईश्वर अंश जीव अविनाशी" संसार के सभी प्राणी परमात्मा के अंश है, फिर भी प्रारब्ध सबको अपना-अपना है। प्रारब्ध के अनुसार सभी को भोगना पड़ता है। भगवान उनके लिये अन्न की आवश्यक्ता नहीं समझते। जैसे वैद्य रोगी के लिये अन्न ग्रहण करना मना कर देता हैं। तो उसका उद्देश्य रोगी को निरोग बनाना है। तात्पर्य हुआ कि भूख से वे ही मनुष्य मरते हैं, जिनका जीना भगवान आवश्यक नहीं समझते। वास्तव में आवश्यक वस्तु केवल परमात्मा ही है। भूख से मरना भी एक साधन है, जिससे पुराने पापों का प्रायश्चित होता है। अत: भगवान कर्मों के अनुसार उससे प्रायश्चित करवाते हैं।

प्र. ऐसी घटनाऐं पढ़ने-सुनने में आती हैं कि कभी तो भगवान संकट से रक्षा कर देते हैं, कभी रक्षा नहीं करते, इसका क्या कारण है ?

उ. भगवान प्रारब्ध का भोग करवाते है। प्रारब्ध होता है तो भगवान रक्षा कर देते हैं और प्रारब्ध नहीं होता तो रक्षा नहीं करते। प्रारब्ध भोग का विधान भगवान करते हैं।

भक्ति की दृष्टि से देखें तो जैसे माँ कभी प्यार करती है कभी थप्पड़ लगाती है, तो दोनों में समान कृपा है ऐसे ही भगवान रक्षा करे अथवा रक्षा न करे, दोनों में उनकी समान कृपा है।

संकलित - महेश प्रेम प्रकाशी, जयपुर

धारावाहिक–35

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ

राग प्रभाती भजन नं.1

पारब्रहम है अगम अगोचर, साक्षी स्वंय प्रकाशी।।

1. नाना विधि जग माँहि रचाई, अद्भुत जोनि चुरासी।
तामें रहता आप व्यापक, अलख पुरूष अविनाशी।1।

2. ब्रह्मा विष्णु शंकर गणपति, यती सती सन्यासी
गाय–गाय तिंह पार न पावत, सर्व मौन रह जासी।।2।।

3. कहे टेऊँ सो मंगल दाता, दुख भंजन सुख रासी।
जो तिस ध्यावे मुक्ति पावै, टूटे तां यम फांसी ।।3।।

व्याख्याः–श्री गुरू महाराज जी प्रखर प्रज्ञावान वेदान्त प्रेमी जिज्ञासुओं को वेदान्त के रहस्य समझा रहे हैं। जो प्रखर बुद्धि रखते हैं जो ज्ञान मार्ग से परमात्मा की ओर अग्रसर है। जिन जिज्ञासुओं मुमक्षुओं को परमात्मा को रिझाने से ज्यादा खोजने की अभिलाषा है। उनके लिये श्री गुरू महाराज जी ने अपना अनुभव इस भजन के रूप में व्यक्त किया है।

हमने संतों के श्री मुख से सुना है वेदान्त देसी घी की तरह हैं और देसी घी सभी नहीं पचा सकते। उसी तरह वेदान्त है असली घी, और वेदान्त की भाषा सबको समझ नहीं आती । पर जो ठान लेते है। अपना मार्ग सुनिश्चित कर लेते है वे जिज्ञासु वेदान्त के रहस्यों को अमृत की तरह पी जाते हैं। और इस ज्ञान को अपने जीवन में उतार कर अपने साधना पथ को सुगम कर लेते हैं।

श्री गुरू महाराज जी कह रहे है। जो पारब्रह्म है। जो ब्रह्मशक्ति है वह सुरति की माता है। स्वयं प्रकाश चेतन सर्वज्ञ अन्तरयामी ब्रह्म आपका पिता हैं सुरति की उत्पत्ति इन दोनों के मिलन से हुई है।जैसे रस मर्मज्ञ महापुरूषों का कहना है कि राधा जी कृष्ण की परा शक्ति है।

इस नाम रूपात्मक प्रपंच की उत्पति के पूर्व संजातीय विजातीय स्वगत भेद से रहित एक ही शुद्ध ब्रह्म था

''एक मेवाद्वतीय ब्रह्म''

उस सतचित आनंद असंग अक्रिय ब्रह्म में एक परा शक्ति हैं वह सत असत से विलक्षण अनादि अनिर्वचनीय माया हैं जैसा कि जगद्गुरू श्री शंकराचार्य जी ने कहा है–

अवयक्त नाम्नी परमेश शक्ति, रनाद्याविद्या त्रिगुणत्मिकापरा कार्यानुमेया सुधियैव माया यया जगत्सर्वमिदं प्रसूयते।।

अर्थ– जो अव्यक्त नाम वाली त्रिगुणात्मिका अनादि अविद्या परमेश्वर की परा शक्ति है। वहीं माया है। जिससे यह सारा जगत उपन्न हुआ है।बुद्धिमान मनुष्य इसके कार्य से ही इसका अनुमान करते हैं। इसी माया ने अलग–अलग योनियों को इस जग में बनाया है। माया परमात्मा की छैनी हथौड़ी का काम करती है मूर्तिकार मूर्ति बनाता है। तो मूर्तिकार अलग और मूर्ति अलग होती हैं कितना भी कुशल मूर्तिकार हो वह खुद को मूर्ति में समाहित नहीं कर सकता है। पारब्रह्म परमात्मा ने यह जगत बनाया और फिर खुद ही उसमें आ गया समाहित हो गया। या यूं कहे कि जगत में छुप गया। उदाहरण के लिये जैसे नृत्यकार में नृत्य समाया हुआ होता है। नृत्य को नर्तक से अलग नहीं किया जा सकता नर्तक की अभिव्यक्ति है नृत्य इसी तरह परमात्मा और संसार को अलग नहीं किया जा सकता संसार परमात्मा की अभिव्यक्ति है और अभिव्यक्ति परमात्मा में समाहित होती है। दोनों को बांटा नहीं जा सकता। लेकिन परमात्मा नृत्य की भांति संसार में छिपा हुआ हैं जैसे नर्तक नाचना न चाहे तो कोई जान नहीं पाएगा कि इसमें नृत्य समाया हुआ है। नर्तक को अपना नृत्य प्रकट करना होता है इसी तरह जिज्ञासु को अपने अन्दर छिपे

परमात्मा को प्रकट करना होता हैं अपने ही आपको मथना पड़ता हैं गुरू नाम की मथानी से जिसे आप योग की भाषा में साधना कह सकते हैं। प्रेम की भाषा में भक्ति कह सकते हैं। उस अव्यक्त अविनाशी परमात्मा को कहने में शब्द समर्थ नहीं है अगर होते तो शंकर मौन धारण न करते ब्रह्म गा–गा कर चुप न हो जाते, क्योंकि कितना ही गाया जाए कितना ही कहा जाए वो अधूरा हैं। मां सरस्वती भी उसका गान करने में समर्थ नही है। इसलिए वेदों को घोषणा करनी पड़ी नैति–नेति नेति लेकिन उस तत्व को कहा भले ही न जा सके पर पाया जा सकता है। समर्थ सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज उसी अव्यक्त परमात्मा को अपने ही स्वरूप को अपनी ही आत्मा को पाने की ओर इशारा करते हैं वो कहीं खोया नहीं है जिसे हम पा लेंगे वो हमसे विस्मृत हो गया है पाया ही हुआ है जैसे कोई कानों पर लगे चश्मे को घर में ढूंढे–ढूढंता रहे नहीं मिलेगा मिल सकता नहीं क्योंकि जो चीज खोई नहीं तो वह मिलेगी कहां वहीं हैं जहां होनी चाहिए केवल विस्मरण हो गया है इसी तरह हमें अपना भी विस्मरण हो गया है। जैसे अपना ही चश्मा अपनी आखों पर हो तो कहते हैं कि चश्मा मिल गया पर चश्मा तो खोया ही नहीं था तो मिलेगा कैसे, पर शब्दों में कहना पड़े या सूचना देनी पड़े तो इन्हीं शब्दों का सहारा लेना पड़ेगा हुआ तो विस्मरण था पर कहना पड़ेगा कि मिल गया और शब्दों का सहारा लेते ही बात बदल जाती हैं हमारा स्वरूप कही खोया नहीं है जो हमें मिल जाएगा वो कोई वस्तु अथवा चश्मा नहीं वहीं हमारा अस्तित्व है अस्तित्व व्यापक है उसे खोया नहीं जा सकता पर हाँ उसका विस्मरण किया जा सकता है। और विस्मरण का तोड़ है स्मरण। भूला हुआ याद आ जाए स्मरण शब्द आया हैं स्मृति से तभी अर्जुन ने गीता में श्री कृष्ण से कहा **स्मृति–लब्धवा तव प्रसादान में अच्युत** मुझे वो स्मृति प्राप्त हो गयी स्मरण हो गया तुम्हारे प्रसाद से तुम्हारी कृपा हो गयी जो मैं भूल गया था वो याद आ गया अर्जुन ने कृष्ण से नहीं कहा कि मैने पाया उसने कहा कि याद आ गया पर याद वो आता है। जो भूला जाए हमने अपनी निजता अपनी आत्मा को खोया नही जो पा लेंगे जो विस्मरण हो गया और एक गांठ पड गयी और खुद को कुछ का कुछ मान बैठे जैसे कोई तोता पिंजरे में रहे और खुद को पिजंरा मान बैठे हमनें भी वही भूल की हैं खुद को देह मान बैठे।

जड़ चेतन की ग्रंथि पड़ गयी, यद्यपि मृशा छूटत कठनई नहिं जिसमें देह और इसमें छिपे विदेह में गांठ पड़ गयी शरीरी और अशरीरी का जोड़ हो गया ये गांठ तो वैसे भी हमारी बनाई हुई है, हम शरीर हैं ये मान्यता भी हमारी ही बनायी हुई है अपनी ही मानी हुई बात को काटने में समर्थ नहीं हो पा रहे। जैसे हनुमान जी अपनी शक्ति को भूल गए थे उसी तरह हम अपने स्वरूप को भूल गए है और हनुमान जी को वो शक्ति याद दिलाई गई। स्मरण कराई गयी और वे शक्तिवान हो उठे इसी तरह सतगुरू भी अपने स्वरूप की याद दिलाते हैं स्मरण कराते है तुम यह देह नही हो तुम इस देह में छिपे विदेह हो तुम यह शरीर नहीं हो इस शरीर में छुपे अशरीरी हो। श्री गुरू महाराज जी कहते हैं जिसे अपना स्मरण हो जाए अपनी सुध आ जाए और स्मरण बोध में बदल जाए तो यात्रा पूर्ण हुई और इस यात्रा की शुरूआत सत्‌गुरू के बिना संभव नहीं है। तो यात्रा सत्‌गुरू के मार्ग दर्शन में ही करनी चाहिये अन्यथा भटकने में देर नहीं लगेगी, तो श्री गुरू महाराज जी कहते हैं उस पथिक की जिज्ञासु की दुखों से निवृत्ति हो जाती है, सारे अमंगल खत्म हो जाते हैं यम के बंधन से छूट जाता है जन्म मृत्यु से परे इस संसार में विचरण करता है।

(क्रमशः........)

स्वामी सर्वानन्द अमृतवाणी

प्रवचन कैसेट

चार साधन

भजनः चारों साधन तुम्हीं साधो, ध्यान धरो दिन राति,
रे तुम पाओ झाति मन एकांति, होवे शांति
प्रभु मिलन राम मिलन पढ़ पाती....

प्रेम से बोलो हरे राम! सारे पूजने योग्य महात्मा मण्डल तथा प्रेमियों, सत्संगियों, गुरमुखों अपने शरीर इन्द्रियों को सावधान करके, आसन बांधकर अपने मन को सावधान करके हरएक जीव, हर एक मुनष्य अपने मन को स्वयं समझावें। सत् शास्त्र, गुरू भगवान क्या करेंगे। कुछ नहीं करेंगे। ऐसा नहीं सब भगवान पर छोड़कर आलस करो। हे मेरे मन! आलस छोड़कर पुरूषार्थ कर। योग वशिष्ट में वशिष्ठ महाराज कहते हैं कि पुरूषार्थ ही तेरा देव है। संत, गुरूदेव सब तेरी सहायता करेगे। हिम्मत देंगे। बाकी काम तेरे को करना है। कृष्ण भगवान कहते हैं–हे अर्जुन लड़ाई तेरे को करनी है मैं बैठा रहूंगा। अर्जुन कहता है ठीक है स्वामी जी आगे घोड़े पर बैठो। बोलो हरे राम। भगवान कहते हैं। अर्जुन कहां चलाऊं। अर्जुन कहते हैं तुमको जहां चलाना है वहां चलाओ। भगवान कहते हैं अर्जुन लड़ाई तू करेगा। बाकी तेरा प्रेम, श्रद्धा है मैंने पहले ही सब को मार दिया है तू निमित मात्र तो हो मैने पहले से ही मार दिया। ये सारे मरे पड़े हैं। माना सत्गुरू भगवान की बड़ी ताकत है हिम्मत देगें। पर तेरे पीछे आगे तूं। बाकी इतनी बात है कि किसी को शंका हो। अगर तेरा पुरूषार्थ रूक गया चल नहीं सकता तो संत गुरू पर जवाबदारी है बाकी जब तक तेरा पुरूषार्थ है तब तक तू हट मत। अर्जुन का भी जब तक पुरूषार्थ चला तब तक लड़ाई की। भीष्म पिता खड़ा हुआ तब लड़ाई हुई तो अर्जुन का पुरूषार्थ रूक गया। कृष्ण भगवान ने कहा कि इसका पुरूषार्थ अब छूट गया तब रथ का पहिया हथियार बनाकर आगे आ गये। भीष्म पिता ने उनके आगे तलवार रखदी और कहा– प्रभु तेरे से लड़ाई नहीं करनी है। अर्जुन का अभी पता चले। तेरे से मेरे को लड़ाई करनी नहीं, फिर क्यों मेरे से लड़ाई कर रहा है। कहा कि प्रभु दुर्योधन के आगे शपथ ली थी कृष्ण भगवान से लड़ाई करके हथियार उठवाऊंगा। सा तेरे को झूठा बनाया है भगवान ने अटकल बहुत अच्छी की है। बोला भीष्म पिता बात सुनी है तू मेरा है प्यारा भगत। तूने प्रतिज्ञा की थी कि कृष्ण भगवान को हथियार उठवाऊंगा। मैंने सोचा भगत झूठा हो जाये इसलिए मैंने हथियार उठाया है मैं झूठा हो जाऊं परन्तु मेरा भगत झूठा नहीं हो। इतनी भगवान संतों में दया है बाकी पुरूषार्थ तेरे को करना है। भगवान संत, गुरूओं को जो देना है वो पहले से ही दे दिया है।

देना था सो दे दिया, जिन दीनी मानुष देही।
राम कुछ राख्यो नहीं, अब हरि सुमरन कर लेहि।।

महात्मा कहते है। भगवान को देवताओं को जो आशीर्वाद करना है वह पहले ही कर ली। अब तेरे पुरूषार्थ के पीछे तेरी सहायता करेंगे। भगवान ने कोई भी वस्तु अपने लिए छिपा के नहीं रखी है जितने भाई–माई बैठे हो। याद करना। आज सारे दिन विचार करना कि भगवान ने हमारे से क्या छिपा के रखा है। अगर कुछ छिपा रखा है। और तुम्हें नहीं दिया है अभी तो तुम्हें संत लेकर के देगें। यह विश्वास करना बताना कि क्या छिपाकर रखा है। मनुष्य चोला बुद्धि दी है। बुद्धि भी तेज दी है। बोलो हरे राम। कर्मों के अनुसार सभी को धन, पुत्र,पदार्थ, मकान भी दिया हैं अपना स्वरूप भगवान का स्वरूप, देवी का स्वरूप, श्री रामचन्द्र, श्रीकृष्ण, को भी अपने जैसा स्वरूप दिया है। हम गये कराची गुरू महाराज की मण्डली। हम गये एक हनुमान के मंदिर में मंगलवार का दिन था। दो मंदिर थे एक मंदिर में काफी भीड़ थी और दूसरे मंदिर में कोई नहीं जा रहा था। हम गये उन्होंने कहा इस मंदिर में बहुत ज्यादा भीड़ है। बोला, इस मंदिर में पांच मुख वाला हनुमान है उधर है एक मुख वाला हनुमान। साध ने कहा दूसरे मंदिर वाले पुजारी को कि तू भी पांच मुख वाला हनुमान बना उसमें बहुत भीड़ लगी हुई है महाराज ने कहा बाद में आकर देखना ग्यारह मुख वाला हनुमान बनाऊंगा अपने जैसे स्वरूप है जैसे हम पैदा हुए वैसे ही वो भी पैदा हुए है। प्रेम से बोलो हरे राम। जितने प्रेमी बैठे हो। हे मेरे

मन पुरूषार्थ कर। पुरूषार्थ करके साधन कर।

"चारो साधन नित ही साधो, ध्यान धरो दिन राती।"

पहले साधनों की साधना कर।

1. विवेक 2. वैराग 3. खटसम्पता

विवेक किसको कहते हैः—वेदान्त कहता हैः—

आत्म अविनाशी अचल है जग तांते प्रतिकूल।
ऐसो ज्ञान विवेक है सब साधन को मूल।।

आत्म अविनासी हैं अचल है स्वयं प्रकाशी है एकरस है जगत परिणाम रूप है दुःख रूप है, प्रेम से बोलो हरे राम। जिनको विवेक प्राप्त हुआ है वो आगे चल सकेगा। ये ग्यारह साधन में से पहले—पहले है विवेक, इन सात साधनों का विचार करेगें तो इसमें से क्या होगा जैसे किसी भी वस्तु का बीज बोने से वह धीरे—धीरे अंकुरित होगा, उसी प्रकार ये साधन करने से बीच में से वैराग निकलेगा। सत् से प्रीत लगती जायेगी। और असत् से प्रीत हटती जायेगी। मोह टूटता जायेगा। वैराग जागेगा। दूसरा साधन है वैराग का। वैराग किसको कहते हैं।

ब्रह्मलोक लौं भोग जो, चहे सबन को त्याग।
वेद, अर्थ, ज्ञाता, मुनी, कहत ताहिं वैराग।।

मृत्यु लोक से ब्रह्मलोक तक भोग उनकी इच्छाओं को त्याग। वेद शास्त्र के ज्ञाता तत्व महात्मा उसको वैराग कहते है। शास्त्र में नौ प्रकार का लिखा है। गुरू महाराज ने समय के अनुसार तीन प्रकार का वैराग रखा है। उत्तम वैराग, मध्यम वैराग, कनिष्ठ वैराग। याद करना।

कनिष्ठ वैराग किसको कहते है संसार के दुःख से लगे। संसार के दुःख माया का, धन, पुत्र का कई दुःख है। दुःख लगे तो वैराग लग जाये। ये कनिष्ठ वैराग। कनिष्ठ क्यों लिखा। कोई व्यक्ति धन से लखपति है पांच लाख कम पड़ जाये तो वैराग पैदा हो जाता हैं फिर छः महीने के बाद अगर बारह लाख रूपये मिल जाये तो वैराग टूट गया इसलिए वो कनिष्ठ है।

मध्यम वैराग मरने के दुःख से बोलो हरे राम। मरने का डर भी एक वैराग का कारण है, गुरू महाराज की सोलह शिक्षाएं पत्र छपे हुए है। प्रेमियों के घर पर है और जिनके घर पर नहीं है तो वह लेकर कांच में फ्रेम करवाकर सभी पढ़ो। पढ़कर पक्की करो। अगर घर में कोई दुःख हो, घबराहट हो, या चिन्ता हो मोह हो उसे पढ़ने पर उसमें से कोई ऐसी शिक्षा निकलेगी जो दुःख दूर हो जायेगा खुश हो जायेगा। उसमें एक शिक्षा आती हैं।

"मरन अपना याद कर ले, तिहं भुलाओ ना क
जान मन में मरण का दिन, निकट आयाहै अ

शरीर रहने वाला नहीं है। मुसाफिर हूं। प्रेम से हरे राम। अभी पूने में ज्योतिषी आये तो प्रेमी ने कहा जी। मेरा हाथ देखो मेरा भाग क्या हैं हाथ दिख भाई—माई। ज्योतिषी हाथ देकर भाग क्या हैं आज कौन सा हैं मंगलवार। दूसरे मंगलवार 10 बजे तेरा समाप्त हो जायेगा। तेरा दाना—पानी पूरा हो ज भाग काहेका, प्रेम से बोलो हरे राम। बाकी सात है आंठवे दिन तू मर जायेगा। विश्वास होना चा मोह बड़ी बात है अर्जुन जैसे वीर भी मोह में फंसक लगे। मोह टूटने से वैराग लगेगा। कबीरदास ने क

"मारूं एक मगंल चार, संत जना के प्राण अधा
आठ पहर जो मांरू गावे, तांके काल निकट नहीं
कहत कबीर मैं मांरू गाया, मांरू गाय परम पद

मांरू याद करके पाप, कर्म, झगड़ा नहीं करेगा टूटा आसक्ति टूटी। तो मुक्त हो जायेगा। मुक्त आजाद होने का। उसका चित आजाद हो जायेगा टूट जायेगा। मिलेगा तो भाग से मिलेगा। सच पूछो। ऐसे भी नहीं कि भाग खुलेगा। तो अपने आप लगेगा। पुरूषार्थ करना पड़ेगा। अगर तेरा पूरब ज भाग नहीं खुला है तो अभी पुरूषार्थ कर। आगे भाग खोल। मिलेगा तो भाग से

जिंह माया ममता तजी, सबते भयो उदास।
कह नानक सुन रे मना, तिंह घट ब्रह्म निवास

मध्यम वैराग, मरने के डर से जैसे राजा परीक्षि लगा सात दिन में मुक्त हो गया। हम क्यों नहीं मुक है क्योंकि हम भी राजा परीक्षित की तरह साधन सात दिन में मुक्त हो जायेंगे।

उत्तम वैराग बालवस्था में थोड़े से उपदेश सु वैराग लग जाता हैं जैसे गोपीचन्द्र को वैराग लगा। बोलो हरे राम। जिस समय में गोपीचन्द को रानिया कराने के लिए तैयार हुईं ऊपर माता बैठी हुई थी। नीचे देखा। गोपीचन्द्र स्नान कर रहा है। नेत्रों में आया। आकर गोपीचन्द्र के ऊपर आसूं के बूंद

गोपीचन्द्र ने कहा–बरसात पड़ रही है क्या? बादल तो देखने में नहीं आ रहे है। जैसे ही ऊपर देखे तो देखे माता रो रही है तो कहा मैं ऊपर देखने आता हूं। क्या है, चढ़ा ऊपर माता को नमस्कार किया और कहा–तेरे को किसी ने कुछ कहा है, किसी रानी ने, दूत ने कुछ कहा है, किसी ने मुझे दुखाया नहीं है और कहा हे पुत्र तू जाकर के स्नान कर। कहा–माता मेरे को स्नान नहीं करना है पहले तू बता। तू रो क्यों रही है। बोली तू इस बात को छोड़ दे। तू जाकर के स्नान कर। प्रेम से बोलो हरे राम। माता ने कहा सच्ची बात बताऊं। पुत्र ने कहा हां माता सच्ची बात बता। तूं स्नान कर रहा था। मैंने तेरा शरीर देखा तो मेरे आंखों में से आंसू आ गये। गोपीचन्द्र कहता है–हे माता मेरा शरीर काला है कुरूप है। जैसे तेरा पिता को स्नान कराती थी तो उसका शरीर चमकता था और उसका शरीर भी एक दिन शमशान में जल गया ऐसा सुन्दर शरीर शमशान में जल गया। फिर माता क्या करूं। बोला गोविन्द का भजन कर। बोला। भजन के लिए तो मुझे मालूम नहीं है तो कहा, मालूम नहीं है तो संतों के पास जा। संतों के पास जा तो तेरे को भगवान का रास्ता दिखायेगें। भक्ति का रास्ता बतायेंगे। गोरखनाथ इधर 10 मील की दूरी नहर के किनारे पर छावणी लगाई है उस समय रानियों ने कहा स्नान किया। बोला कर लिया और चला माता को भी पता नहीं था उन्होनें कहा पुत्र कहां जा रहा है वो भी नीचे उतर के आई। प्रेम से बोलो हरे राम। शहर के बहुत लोगों ने उसे बुलाया। नंगे पैर, कपड़े बिना चलता गया। सीधे नहर के किनारे पर पहुचा और नहर के किनारे पर गोपीचन्द्र खड़ा था, दूर से देखा तो उन्होंने सोचा कौन है जब पास में आया तो उन्हें नमस्कार किया। मामा था तो नमस्कार किया, कहने लगा–पुत्र कुछ खबर बता। बोलो हरे राम।

गोपीचन्द्र से भृतहरी पूछा सारा हाल।
कहो पुत्र क्या होइया, क्या गड़बड़ भूपाल।।

हे राजन् बताओ पूरा हाल। सच्ची सच्ची। बता क्या बात है जो तू भाग के आया है। तब वैराग तो था। आंखों में से पानी आया। सारा हाल बताया संसार का दरवाजा बन्द करके आया हूं क्यों:–

माता का उपदेश सुन, हुआ राग वैराग।
गुरू शरण में आया, जागा हमरा भाग।।

बस अब घर नहीं जायेगा। गोविन्द का भजन करूंगा। उत्तम वैराग गोपीचन्द्र को गुरूनानक बचपन से कबीरदास सत्गुरू टेऊँराम महाराज बचपन से ही वैराग लग गया। प्रेम से बोलो हरे राम। ये तीसरा वैराग विवेक से है–तीसरा साधन खटसम्पता। जिसमें छः साधन है लेकिन साधन एक है। कौनसे है छः साधन–

सम दम श्रद्धा तीसरी, समाधान उपराम।
छठी तितिक्षा जानिये, भिन्न–भिन्न यह नाम।।

सम नाम किसका है और दम नाम किसका है।

मन विषयन ते रोकनो, सम तिहं कहत सुधीर।
इन्द्रिय गन को रोकनो, दम भारवत बुधिवीर।।

मन के फुरनों को रोककर मन को गुरू मन्तर में आत्म चिन्तन में, इन्द्रियों को दमन करना। बोलो हरे राम। श्रद्धा किसको कहते हैं।

सत्य, वेद, गुरू वाक्य है, श्रद्धा अस विश्वास।
समाधान ताकों कहत, मन विक्षेप को नास।।

सत्–शास्त्र महात्मा गुरू के वचन में विश्वास निश्चय होवे। विश्वास की जय है, आधा काम करेगा विश्वास और श्रद्धा। आधा काम करेंगे अपने साधन। याद करना।

"समाधान तांकों कहत है मन विक्षेप को नास।"

समाधान किसे कहते हैं। मन की चंचलता, विक्षेप, बहुत ज्यादा मन चंचल है। प्रेम से बोलो हरे राम।

"साधन सहित कर्म सब त्यागे, लखि विष सम विषयन से भागे।
दृग नारी लखि हवै जिना ग्लाना, यह लक्षण उपराम बखाना।।

कर्मो के साधन का त्याग,कर्म भी छोड़े, साधन भी छोड़े इसमें कोई शंका पड़े। साधन दो प्रकार के होते है।

1. अन्त रंग साधन

2. बहि रंग साधन

बहि रंग साधन अपने आप टूट जायेंगे लेकिन अन्त रंग साधनों को तोड़ना है। कर्म उसको भूल जायेंगे। मस्ती,मौज में। जब उसे वैराग आया तब कर्म अपने आप चले जायेंगे उसे याद ही नहीं रहेंगे। जिस समय मीरा को प्रेम लगा है। मीरा पहले पाठ पढ़ती थी। पांव छूती थी ग्यारस का व्रत रखती थी। अब कुछ भी नहीं करती है अब बिल्कुल ही कर्मो से भ्रष्ट हो गई हैं सभी भाई–माई मिलकर मीरा को कहने लगे है मीरा खबर तो बता। तूने तो सारे कर्म ही छोड़ दिये हैं।

गोविन्द लीनो मोल सखीरी मैंने, कोई कहे मंहगो, कोई कहे संहगो
लीनो तराजू तोल सखी री, मैंने गोविन्द लीनो मोल सखीरी मैंने

मैं तर जाती हूं भवसागर से। कोई कहते है भक्ति करना बहुत कठिन है और कोई कहता हैं भक्ति करना बहुत सरल है। भक्ति करना कौनसी कठिन है.बहुत पाव छूते है माल बनाते है रोटी खिलाते है जय-जय बोलता है हाथ जोड़ते है भक्ति करने में कौनसी मुसीबत है भक्ति करना बहुत सरल है। और कहते हैं भक्ति बहुत कठिन है:-

जप, तप संयम ध्यान न आवत।
हाथ बजाऊँ ढोल सखीरी मैंने।।

जप,तप,ध्यान सब भूल गई है बोलो हरे राम। नफरत नहीं आई है कि मैं नहीं करूं। मेरे पास समय नहीं है मैं बिल्कुल भी फ्री नहीं हूं। हाथ बजा ढोल'' बोलो हरे राम। मैंने प्रेम की पोशाक पहनी है। कोई क्या कर रहा है। और कोई मस्ती कर रहा है। कोई पागल कह रहा है।

मैं हाथ बजाऊं ढोल।

मैंने ढोल बजाकर बहुत मौज की है कहने लगे कि तेरे को मिला क्या है?

मीरा कहे मेरे घर आये ठाकुर
सर्वस्व दिया घोल सखी री मैंने
गोविन्द लीनो मोल सखी री मैंने।।

बोलो- मेरे घर पर भगवान आये हैं। बोले-भगवान पहले नहीं थे क्या? मीरा ने कहा पहले भगवान सामान्य रूप में थे। अब विशेष रूप से आये हैं। प्रेम से बोलो हरे राम? वैराग होगा, सच्चा प्रेम होगा उस समय छोटे-छोटे कर्म भूल जायेंगे। कई महात्मा अनेक कर्म करते हैं। निष्काम होकर निर्माण होकर करते है। और जो कामना के द्वारा कर्म करते हैं। वह कर्म बंधन में आते हैं। प्रेम से बोलो हरे राम और अन्तरंग साधन करो, बहिरंग साधन अपने आप छूट जायेंगे जैसे इस बड़े असू के महीने में मोर ज्यादा होते है। असू के महीने में मोर के पंख अपने आप झड़ते जाते है। वैसे मोर को पकड़कर पंख तोड़ें तो मोर मर जायेगा। जब वैराग, प्रेम होगा तो छोटे-छोटे कर्म अपने आप छूट जायेंगे। प्रेम से बोलो हरे राम। छठा नाम है तितिक्षा, तितिक्षा नाम किसका है सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास सहन करना। जो प्रभु बनाये उस पर राजी रहना चाहिए। संतोष होना चाहिए। सोलह शिक्षा में एक शिक्षा आत

जो बनावे आप प्रभू ताहिं पर राजी रहो।
जा बनी सा है भली सब यूं सदा मुख से कहो

जो प्रभु बनावे उस पर संतोष करना चाहिए तीसरा साधन है।

चौथा साधन है:

ब्रह्म प्राप्ति और बंध की हानि मोक्ष को रूप।
ताकी चाह मुंमुच्छता, भाखत मुनिवर भूप।।

चौथा साधन है मोक्षता, ब्रह्म की प्राप्ति बंध संसार का आधार। प्रेम से बोलो हरे राम। आधार देखने में नहीं आयेगा क्या? आयेगा। जैसे पहले देख वैसे नहीं। उनको आंखे नहीं हैं क्या? हरे राम। ज लोग बोलते है। सांतवी भूमिका में खिलायेगा भी दू क्रिया कर्म भी दूसरा करायेगा। तीसरा खाट पर रहेगा। राजा जनक विदेह मुक्त यानि जीवनमुक्त र ऊपर विदेह मुक्त है। महात्माओं के वचन में सारा रखा हुआ है। पहले जैसे देखते थे कि संसार ना असत् रूप है सारा संसार ब्रह्मरूप है। खायेगा, पी सारा व्यवहार काम करेगा। लेकिन उसके निश्चय में बात होगी। जैसे राजा वजीर और कुछ पानी पीने के लेकर शिकार करने गये। एक पहाड़ में शिकार वि उस पहाड़ी में पानी नहीं था। शिकार करते करते 12 का समय हुआ। पानी आकर थोड़ा बचा। राजा ने पानी दो, प्यास लगी है। राजा ने कहा वजीर प्यास है। वजीर ने कहा इस ज़ंगल में पानी है ही नहीं। ने कहा चलो वजीर ने घोड़े पर चढ़ने के लिए कहा राजा को पकड़ने के लिए दिया और राजा को प्या कारण पकड़ा नहीं जा रहा था।

ईश्वर बिन न मिले सरस्वती, गुर बिन मिले न ज्ञ
जल बिन हंसा उड़ गया, अन्न बिन तजे प्रान।

भूख को सहन कर सकते है लेकिन प्यास को स नहीं कर सकते हैं। प्रेम से बोलो हरे राम। वजीर ने घबराओ मत। अब हम पास आ गये है। जंगल से निक देखा एक नदी बह रही थी। बड़े खुश हुए राजा ने व को कहा अब मैं नहीं चल सकता हूं। मैं इस पेड़ के बैठा हूं। राजा को पेड़ के नीचे आसन बिछाकर बिठ बजीर पानी लेने के लिये गया लेकिन वों नदी नहीं

वह सूरज की रोशनी थी दूर से नदी लग रही थी। वजीर ने देखा एक मुसाफिर आ रहा था। वजीर ने कहा–हे राजन। मेरे को प्यास लगी है और राजा को भी प्यास लगी हैं मैं इधर बैठा हूं। तू सामने नदी से पानी ला दे। बोला नदी कहां है। वो घबराने लग गया। वजीर ने कहा क्यों काम नहीं करेगा। बोला परन्तु मैं इतना सुबह से चला हूं। 10–12 मील चला हूं। मुझे तो कहीं पर भी पानी नजर नहीं आया परन्तु मुझे कहीं कीचड़ भी नहीं नजर आई बिल्कुल सूखा था। मैंने भी देखा नदी नहीं है। मुझे भी प्यास लगी है। वजीर को आया गुस्सा और वह उसको राजा के पास लेकर के आया और बोला पानी नहीं लाकर दे रहा है। बोला, मैंने 10–12 मील चला हूं। मुझे तो कही पर नदी नजर नहीं आयी। मेरे को उल्टा प्यास लगी पड़ी है। राजा ने वजीर को कहा वजीर और मुसाफिर दोनों पानी भरने जाओ मैं इधर बैठा हूं। दोनों चले वजीर को निश्चय है कि नदी है परन्तु मुसाफिर के निश्चय में पानी नहीं है। यह सारा संसार भी ऐसे दिखता है। पर है नहीं। महात्माओं के समझाने के वास्ते बहुत नाम रखे है। परन्तु अनामी है। शास्त्र में लिखा है अनवृत्ति अनिवर्चनीय किसको कहते है। जो सत् भीइ नहीं हो असत् भी नहीं हो उसे कहते है। अनिर्वचनीय। ये संसार अनिर्वचनीय है सत् भी नहीं है। असत् भी नहीं है। गुरु महाराज ने कहा।

जग साचा वा मिथ्या है ये मुख से कहा न जाता है।
ज्ञान दृष्टि से देखत हूं, जब रंचक नज़र न आता है।
इन नैनों से देखत हूं तो जग सब को भरमाता है।
कहे टेऊँ वेदान्त इसी को अनिर्वचनीय कह गाता है।।

क्या कहो जग साचो मिथ्या। क्या कहे जग सच्चा है या मिथ्या सत् कहूं तो है नहीं मिथ्या कहूं तो भार। अर्न्तमुखी अपनी विरती को धीरे–धीरे लीन कर। नेत्र बंद कर सभी। बाहर का तो नहीं दिखता है परन्तु अन्दर का सारा दिखता है। लेकिन अर्न्तमुख होकर अपनी विरती को लीन कर। अपने स्वरूप में शरीर को लीन कर संसार है नहीं सत् भी नहीं असत् भी नहीं। सत् और असत् का आखिर फैसला तो होगा अदृष्टान्त का रूप है। अज्ञानी जीव को यह निश्चय है कि जितना सुख पाऊं शादी होगी, पुत्र होंगे, पोते होंगे, मकान होंगे, संसार में आनन्द होगा। राजा है प्रारबोध के हुक्म से ज्ञानी अज्ञानी दोनों जीव संसार में निकलते है। खाना–पीना, घूमना–फिरना सब एक जैसा है पर उसके निश्चय में है कि कुछ है नहीं और उसके निश्चय में है कुछ है। प्रारबोध के हुक्म से सभी चल रहे है। बोलो हरे राम।

टेकः जो कुछ तुम यह देख रहे हो, सो सब खेल तुम्हारा है।
तुम ही खेल बनाया सारा, तुम ही देखनहारा है।
तेरे होते सब कुछ होवे, तुझ बिन नहिं संसारा है।
तेज तुम्हारे से प्रकाशत, अग्नि रवि शशि तारा है।
सबके अन्दर तूही रमिया, तूही सबसे न्यारा है।
कहता टेऊँ तीन लोक में, तेरा ही दीदारा है।

ये सब तेरा खेल है। तू है तो संसार है नहीं तो संसार है नहीं, जो गये है अपने मित्र प्राणो से प्यारे उनके लिए संसार है या नहीं। ये संसार तेरे लिए भी नहीं है और नाहीं मेरे लिए है ये केवल संसार खेल के समान है। निश्चय विश्वास करना बहुत कठिन हैं। विश्वास पूरा हुआ तो जन्म मरण का फेरा टूट जायेगा। प्रेम से बोलो हरे राम। जितने प्रेमी बैठे हो सत्संग करो भली परन्तु मोक्ष की इच्छा करो। संसार के पदार्थ की इच्छा न होकर मोक्ष की इच्छा रहे। गुरू महाराज ने कहा है।

मुक्ती के हित सत्संग करिये, श्रद्धा मन में धारो जी।
संत वचन को श्रवण कर पुन बैठ एकान्त विचारो जी।
फेर उसी में निदिध्यासन कर, संसा भ्रम निवारो जी।
कहे टेऊँ तत तूं मसि सोये, जन्म–मरण दुःख टारो जी।।

मोक्ष के वास्ते श्रद्धा मन में विश्वास रखकर सत्संग करिये। संतों के वचनों को श्रवण करके एकान्त में बैठकर उसका विचार करें। ऐसे नहीं एक कान से सुनो दूसरे कान से निकाल दो। इस पर दृष्टान्त तो काफी है लेकिन अब समय पूरा हुआ है। ये कथा इधर रखते हैं। प्रेम से बोलो हरे राम। श्रवण करके फिर उसका मनन कर। संसा भ्रमों को दूर कर। और शंका हो तो संतो से पूछना। अगर किसी को शंका हो तो वह भली कहे। चौथा साधन पूरा हुआ। ये कथा यहीं रखते हैं। बाकी सात साधन और छः भूमिकायें है। अभी समय पूरा हुआ है। जो चार वचन सुने हैं उसका विचार करो, विचार के बिना कुछ बनने वाला नहीं है। इसमें भगवान की आशीर्वाद चाहिए और पुरूषार्थ चाहिए। समय पूरा हुआ है। जो चार वचन सुने हैं उसका विचार करो।

संकलन–ज्योति खत्री, जयपुर

सद्गुरू शान्ति प्रकाशष्टकम्

1. शान्तिप्रकाशं किल कान्तिमन्तं
अधीत गीतादिक ग्रन्थरत्नम्।
विज्ञात वेदान्त मनन्तशान्तम्
नभामि सन्त खलु ज्ञानवन्तम्।।

अर्थ–अत्यन्त उज्जवल कान्ती वाले गीता आदि ग्रन्थों को पढ़ चुकने वाले, अत्यन्त दुरूह वेदान्त शास्त्र के ज्ञाता, ज्ञानवान् सन्त श्री शान्तिप्रकाश जी महाराज को प्रणाम है।

2. शास्त्राणि चित्ते मनसि दया च
मुखे सदा सत्संग शास्त्र चर्चा
विचित्र तेजो दिदिपे ललाटे
तस्मै नमः शान्ति प्रकाशकाय।

अर्थ– जिनके चित्त में शास्त्र मन में दीनों के प्रति दया, मुख में सदा सत्संग वाणी और शास्त्र चर्चा तथा ललाट पर विचित्र तेज विराजमान है उन शान्ति प्रकाश जी महाराज को नमस्कार है।

3. उष्णीषपट्टं शिरसि त्वदीये
स्नेहस्तथा दिव्य प्रकाश नेत्रे।
प्रेमी जनोद्धार प्रगाढ़ इच्छा
अन्तः स्थले ते शरणं प्रपद्ये।

अर्थः–हे गुरूवर! आपके दिव्य सिर पर भव्य पगड़ी है, नेत्रों में अपार स्नेह और प्रकाश है आपके अन्तःस्थल में प्रेमी जनों के उद्धार की दृढ इच्छा है। मैं आपकी ही शरण में हूं।

4. विषयानदग् कर्तुमनेन मन्ये
निमीलितं चक्षुषीऽनित्ये नूमम्।
हृल्लोचनाभ्यां च पपाठ लोकं
सत्यं नमामः गुरूदेव! तुभ्यम्।।

अर्थः–सांसारिक विषयों को नहीं देखने की इच्छा से ही आपने इन दोनों नश्वर नेत्रों को बन्द कर लिया था तथा हे गुरूदेव! संसार को सत्य का पाठ पढ़ाने के लिए आत्म लोचन खोल लिये थे। हे गुरूदेव! आपके चरणों में प्रणाम है।

5. उल्लास नगरे वसतिं विधाय।
कर्मस्थली भूत पवित्र क्षेत्रे।।
कायेन वाचा मनसा चकार।
स्वामी तपासि त्रिविधानि नित्यम्।।

अर्थः–पवित्र उल्हास नगर को आपने कर्मस्थली के रूप में चुना तथा वहां पर निवास किया। सेवा द्वारा शरीर से सत्संग द्वारा वाणी से और नाम जपकर के मन से त्रिविध ा तप किया।

6. प्रकाश पुंजाय च शान्ति धाम्ने
सतां सुरामाय गुरू प्रियाय।
दुःखौघनाशाय कृत श्रमाय
शान्ति प्रकाशाय पुनर्नमामः।।

अर्थः–जो सत्गुरू प्रकाश के साक्षात् पुंज (समूह) थे, शान्ति के परम धाम स्थान थे, सज्जनों और सन्तों के प्रिय थे, जो अपने गुरू के परम प्रिय थे दुखों के ढेर का नाश करने के लिए सदा परिश्रमरत थे। उन स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज को पुनः पुनः प्रणाम हैं।

7. योगीजनानामपि दुर्गमे यत्।
सेवादिकार्ये निरतम् तपस्विम्।
दाक्षिण्य सारल्य गुणै र्विनम्रम्
शान्तिप्रकाशञ्च पुनर्नमामः।।

अर्थः– जो सेवा कार्य योगी जनों के लिए भी अत्यन्त दुर्गम और कठिन है उस सेवा कार्य में सदा तत्पर रहने वाले, तपस्वी, उदार चित्त वाले, अत्यन्त सरलता आदि गुणों से विनम्र शान्ति प्रकाश जी महाराज को प्रणाम हैं।

8. श्री,शंकराचार्य स्वयं चकार
संभाषणं येन समं सहर्षम्।
सन्तोऽयनेके मिलितुमगच्छम्
शान्तिप्रकाशाय नमोऽस्मदीयः।।

अर्थः–श्री शंकराचार्य स्वयं जिनसे वार्तालाप कर प्रसन्न होते थे, अनेक सिद्ध सन्त जिनसे मिलने के लिए आया करते थे उन स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज को हमारा नमस्कार स्वीकार हो। !! इति!!

प्रणेता
दाचिमथः सुनील कुमार शर्मा(प्राध्यापक)
प्राचरू विद्यापीठ आचार्य महाविद्यालय
आमेर मार्गः जयपुरम्
संकलन–हेमन्त प्रेम प्रकाशी (जयपुर)

सद्गुरू स्वामी श्री शान्ति प्रकाश महिमाष्टक

1. श्लोकः– निष्काम सेविं श्रीकृष्ण धेयिं,
बाकं पवित्रं सत्यम् वदामी।।
सदग्रू सुधी टेऊँरामस्य भक्तं,
शान्तिं–प्रकाशं गुरूवर नमामी।।1।।

अर्थ– सदगुरू स्वामी श्री शान्ति प्रकाश जी महाराज निष्काम–सेवी, श्रीकृष्ण–धेयि, पवित्रवाणी वाले, सत्य–सुभाषक, विशुद्ध मेघावी सदगुरू स्वामी श्री टेऊँरामजी महाराज के शिष्य हैं, उन गुरूवर स्वरूप श्री शान्ति प्रकाश जी महाराज के पद–पद्मों में हम सादर नमस्कार करते हैं।

2. श्लोक– अमरापुरं सत्य दरबार सुरक्षकं,
उल्हास नगरं सुआश्रम करोतिकम्।
धर्मं समाजं सुरक्षकं सुशोधकं,
प्रेमं–प्रकाशं सुग्रन्थं प्रसारकं।।2।।

अर्थः–सदगुरू स्वामी श्री शान्तिप्रकाश जी महाराज अमरापुर सत्य–दरबार के संरक्षक, उल्हास नगर में आश्रम के स्थापक, धर्म, समाज के सुरक्षक, सुशोधक तथा प्रेम–प्रकाश सुग्रंथ के प्रचारक हैं।

3. श्लोकः– सुर सरि विशेषं सहितं निशेषं,
परोपकारिम् पुरषार्थ प्रवरं।
रक्षा–निबन्धं दिवसं प्रजातुं,
संतनि शिरोमणि प्रज्ञा सुप्रखरं।।3।।

अर्थः–सदगुरू स्वामी श्री शान्तिप्रकाश जी महाराज गंगा जी से पूर्णरूप से विशेष प्रेम करने वाले, परोपकार करने वाले, श्रेष्ठ पुरूषार्थी, रक्षा बन्धन के दिन उत्पन्नित, सन्तों में शिरोमणि तथा प्रज्ञा में सम्यक प्रखर प्रख्यातित हैं।

4. श्लोकः–भगवत सुभक्तं निज रूप रक्तं,
त्रिगुणं असक्तं सुख शान्ति धामं।
महिमा अनन्तं अनघात्मवन्तं,
सन्तत सुमग्नित श्रीकृष्ण नामं।।4।।

अर्थ– सदगुरू स्वामी श्री शान्तिप्रकाशजी महाराज भगवान के सम्यक भक्त, स्वरूपानुरक्त, त्रैगुण्य–रहित, सुख शान्ति–धाम, सम्पूर्ण पाप रहित, आत्मवंत, सदा ही श्रीकृष्ण भगवान के नाम में सुमग्नित रहने वाले अनंत महिमाब्धि सिद्ध हैं।

5. श्लोकः– श्रुति शास्त्र ज्ञातुं परमात्म ध्यातुं,
सतनाम साक्षी सुमंत्र प्रचारकं।
गौ–वृद्ध देश सुसेविं विशेषं,
शिक्षा चिकित्सा सम्यक प्रसारकं।।5।।

अर्थः–सदगुरू स्वामी श्री शान्तिप्रकाश जी महाराज सम्पूर्ण वद–शास्त्रों के ज्ञाता, परमात्म–ध्याता, सत्‌नाम साक्षी सुमंत्र के प्रचारक, गौ, वृद्ध और देश के सुसेवी तथा शिक्षा और चिकित्सा के सम्यक प्रचारक ख्यातित हैं।

6.श्लोकः– होलिकोत्सवं करोति भूरि–भावं,
शिवम् समं टेंऊँरामं प्रतीतिकं
विष्णुं समं प्रेम–पंथं प्रकाशकं,
शोषकं अगस्त्येव भवाम्भोधि रीतिकं।।6।।

अर्थः–सद्‌गुरू स्वामी श्री शान्तिप्रकाश जी महाराज अत्यंत प्रेम–भाव से होलिकात्सवीय पावन–पर्व मनाने वाले, भगवत्स्वरूप भक्तयाचार्य सन्त–शिरोमणि अनन्त श्री विभूषित सद्‌गुरू स्वामी टेऊंरामं जी महाराज में शिवजी के समान विश्वास करने वाले, विष्णु भगवान के समान प्रेम–पंथ के प्रकाशक तथा अगस्त मुनि की तरह सम्यक प्रकार से संसार–रूपी समुद्र के शोषण करने वाले हैं।

7. श्लोकः– दीनं हितैषिम् विनयी सुशीलम्,
भक्तं–प्रवक्तं–सत्संग–इच्छुक।
लोकोपकारिम् कार्यं सुकर्तुम,
योगिम् मनीषिम् हरि भक्ति भिक्षुक।।7।।

अर्थः–सदगुरू स्वामी श्री शान्ति–प्रकाश जी महाराज दीनों के परम हितैषी, पूर्ण विनयी सम्यक शीलवान, भक्तों और प्रवक्ताओं के सत्संग– अभिलाषी, लोकोपकारी कार्यों के सक्षम सुकर्ता, योगी, मनीषी हरि–भक्ति के भिक्षुक हैं।

8. श्लोकः– प्रेमं–प्रकाशं सँदेशं सुपत्रिकं,
दिव्यं प्रकाशकं सुलोक्यं हितार्थम्।
इंद सुगुरू शान्ति प्रकाश महिमाष्टकं,
पठितं अनन्यं भवतुम् कृतार्थम्।।8।।

अर्थः–सदगुरू स्वामी श्री शान्ति–प्रकाश जी महाराज इस लोक के हित के लिए प्रेम–प्रकाश–संदेश सुपत्रिका के दिव्य–प्रकाशक हैं। सद्‌गुरू स्वामी श्री शान्ति प्रकाश जी महाराज के इस महिमाष्टक को अनन्त–भाव से पढ़ने पर साधकगण कृतार्थ होंगे।

सत्‌गुरू स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज की अन्तःप्रेरणा से निःसृत....।

प्रेषकः–
श्री सदगुरू–चरणारविन्द– चंचरीक
सुरेश (सांवल) प्रेम–प्रकाशी
"प्रेम–प्रकाश–आश्रम" मुरैना (म.प्र.)

स्वामी शांतिप्रकाश वाणी

सत्गुरू स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज के मुखार बिन्दु से निःसृ

पंचामृत सेवा, सुमिरन, सत्संग, सदाचार, साधसंगति

पंचामृत सूत्रः—महापुरूष भक्ति ज्ञान की निरंतर प्रवाहित स्त्रोतस्विनी होते हैं। जैसे पवन और सरिता का प्रवाह कभी नहीं रूकता वैसे ही संतो के हृदय से निःसृत रसधारा प्राणिमात्र के कल्याण के लिये बहती रहती है। संतों की अमृतमयवाणी हमको अपने असली मंजिल सत् चित आनंद के गन्तव्य की ओर ले चलती है। इस युग की महान विभूति संतप्रवर सत्गुरू शांतिप्रकाशजी महाराज ने अपने हृदय कमल से लोक कल्याण के लिये निरंतर अनेक सूत्र प्रदान किये। वे साधक जीवन के लिये अत्यंत उपयोगी है मैंने अपनी सीमित बुद्धि से उसे पंचामृत के नाम से बांट दिया है ताकि हम किसी एक सूत्र को भी आत्मसात कर उसमें डुबकी लगायें तो निश्चित ही हमारी साधना में गति आयेगी आइये उन सूत्रों का गहन विचार करें।

सेवा

1. संत, गुरू व परमात्मा को प्रसन्न करने के लिये सेवा श्रेष्ठ साधन है।
2. सेवा वो ही कर सकता है जिसमें कोई स्वार्थ व अभिमान नहीं ।
3. निष्काम सेवक प्रभूको प्रिय लगता है।
4. यह सारा संसार परमात्मा का मंदिर है इस मंदिर में परमात्मा स्वयं विराजमान है इसलिये सबको ठाकुर रूप समझकर श्रद्धा से सेवा करें। सेवा का परम लाभ है आत्मशुद्धि।
5. सबको अपना समझकर सेवा करो। किसी का अपमान मत करो। जो किसी का अपमान करता है समझो वो सीधा–सीधा परमात्मा का अपमान करता है।

सुमरन

1. सुमिरन करने से यमराज का बंधन टूट जाता है।
2. सुमिरन द्वारा अपने निज स्वरूप का ज्ञान होता है फिर वो आदमी जन्म–मरण के भयंकर दुखों छूट जाता है।
3. परमात्मा का सुमिरन जीव का आदि मध्य अं अंत तक सुरक्षा करता है।
4. सुमिरन के योग्य एक मात्र परमात्मा है।
5. जो जिसका सुमिरन करता है वो उसी लोक जाता है।परमात्मा के अतिरिक्त सभी सुमिरन जन्म मरण के हेतु हैं। इसलिये परमात्मा क सुमिरन सीधे प्रभू परमात्मा से मिलाता अथव भगवान से जोड़ता है।

सत्संग

1. संसार में सबसे भाग्य शाली वो ही आदमी है जो नित्य–नियम से सत्संग करता है।
2. सत्संग ही परमात्मा का खास घर है।
3. जो सत्संग में आकर बैठते हैं समझो वो सीधे परमात्मा की गोद, में आकर बैठते हैं।
4. सत्संग की तुलना में और कोई श्रेष्ट कर्म नहीं है।
5. जो सत्संग नहीं करता एवं सत्संग में आकर नाम नहीं जपता उसे रोटी खाने का अधिकार नहीं है।

सदाचार

1. अपने मन को प्रेम पूर्वक एकांत में बैठकर समझाओ।
2. सन्तो के गुण कौन से हैं चोरी न करना, चुगली न करना, निन्दा न करना, किसी का अवगुण न देखना।
3. सबसे मीठा बोलो व किसी की बुराई मत करो बुराई से इससे हम स्वयं दूषित हो जायेंगे।
4. शुभ कर्मो का व्यापार करो चूंकि परमात्मा के पास पूरा –पूरा हिसाब होगा फिर वहां पर बहानेबाजी नहीं चलेगी।

5. जो सदाचारी होकर संसार का विचरण करता है वो लोक परलोक में सुखी रहता है।

साधु संगति

1. व्यक्ति का सुधार साधु संगति से ही होगा।
2. जो साधसंगत करेगा उसे यमराज तंग नहीं करेगा।
3. चमार, चाण्डाल, कोरी, कसाई, डाकू, दानव, कृपण, नाई, भील, वेश्या आदि ऐसे–ऐसे अधम लोग भी साध संगत करके अपने को कृतार्थ कर गये।
4. साधसंगत से क्या–क्या लाभ है। निर्गुण से गुणवान बन जाते हैं। बुद्धू से बुद्धिमान जाते हैं पशु से इंसान बन जाते हैं। साध संगत धन्य धन्यकर देता हैं
5. साधू संगति से सोया हुआ भी जाग जाता है। भूले हुये को राह मिल जाती है। और सबसे बड़ा लाभ व्यक्ति साधारण इंसान से भगवान बन जाता है। अतः साध संगत से लाभ ही लाभ है इसे खूब करो।

विशेषः–यह पंचसूत्र गुरू महाराज जी के प्रवचनों परआधारित है। जिन साधकों को साधना जगत में प्रवेश करना है उसे इन पांचसूत्रों का नितांत चिंतन करते रहना चाहिए। इन सूत्रात्मक बातों को हम छोटा न समझें यह परम रहस्य ज्ञान हैं अतः अपने जीवन को कृतार्थ करने के उद्‌देश्य से इन पांचों सूत्रों को अपने हृदय में आत्मसात करें। गुरू महाराज जी की कृपा सदैव हम सब पर बरसती रहे यही मंगल कामना है।

–दिलीप प्रेमप्रकाशी (बड़ौदा)

समीक्षा **प्रत्येक वी.सी.डी. का मूल्य मात्र 20 रु.**

अनंतश्री विभूषित युगपुरूष सत्‌गुरू शांतिप्रकाश जी महाराज के श्रीमुख से निःसृत पावन ज्ञान-गंगा (सत्संग वर्खा अब वी.सी.डी. में)

उल्हासनगर। प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर द्वारा युग पुरूष सत्‌गुरू स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज के सत्संग–वर्खा का वी.सी.डी. के रूप में निर्माण कराया गया हैं प्रत्येक कैसेट जिसका मूल्य बीस रूपये रखा गया है। कैसेट का विवरण इस प्रकार है।

1. गम खाईन्दे–सुख पाईन्देः– इस लोक प्रिय भजन पर पूज्य गुरूदेव अत्यंत मार्मिक व सरल प्रवचनों से संसार में रहने की कला सिखाते हैं।

2. राम सां मिलाएः– एकादशी के पावन दिन परआयोजित इस सत्संग प्रवचन में पूज्य गुरूदेव ने प्रेम भक्ति पर प्रकाश डाला है व एकादशी के महत्व को समझाया हैं

3. सत्गुर तुंहिजे नाले तां मां वार–वर बलिहार वञांः– इस पावन प्रवचन में पूज्य गुरूदेव ने "गुरूमन्त्र" की साधना पर व महिमा पर प्रकाश डाला है। यह सत्संग प्रातः कालीन समय में सुनने के लिये है।

4. पवनि यादि पल–पल प्रीतम प्याराः– श्री अमरापुर स्थान पर आयोजित चैत्र मेले के अवसर पर दिया गया यह प्रवचन–अत्यंत मधुर व सरल है। इस प्रवचन् में पूज्य गुरूदेव ने भगवान व गुरू की भक्ति कैसे की जाय इस विषय को मार्मिक प्रसंगों द्वारा समझाया है।

ऑडियो कैसेट

महिर करि महिर करि

।। सत्‌गुरू स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज।।

उल्हासनगर। प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर –5के 32 वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर युग विभूति सत्‌गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज के प्रवचनों के नये ऑडियो कैसेट महिर करि–महिर करि सत्संग वर्खा–भाग–26 को संत मण्डल द्वारा जारी किया गया है। श्री अमरापुर स्थान पर आयोजित प्रातः कालीन सत्संग में राग प्रभाती भजन में पूज्य गुरूदेव ने प्रभु परमात्मा की स्तुति करते हुये बताया कि यह जीव उस प्रभु के आश्रय से ही चल रहा है जैसे कोई मशीन आदि विद्युत बिजली के सहारे से चलती है वैसे ही यह जीव उस प्रभु की विद्युत शक्ति से चल रहा है। अतः अपने झूठे अहंकार को छोड़कर उसे उस परम पिता परमात्मा को सदैव प्रार्थना व उसकी स्तुति करते रहना चाहिए।

अत्यंत मार्मिक कथाओं व प्रसंगों से ओत प्रोत यह कैसेट मात्र दस रूपये में उपलब्ध है।

कैसेट का नाम– महिर करि महिर करि
मूल्य– 10/–रु. दस रूपये मात्र
भाग – 26 वां

समीक्षा–प्रेम प्रकाशी दिलीप, बड़ौदा

अनुभवी घरेलू नुस्खे

स्वस्थ कैसे रहें

हर मौसम में प्रकृति हमें हमारे रोगों से छुटकारा पाने के लिये भोजन के रूप में कुछ चीजें देती रहती है। जिसके खाने से कई रोग नष्ट हो जाते हैं व कई रोग जड़ से समाप्त हो जाते हैं। व कई रोग होंगे ही नहीं, जैसे हर सरदियों में आंवला निकलते हैं तीन आंवलों को कसकर मुट्ठी में रख कर भींच कर रस निकालें या कपड़े में डाल कर निचोड़ कर रस निकालें अथवा निबू रस निकालने वाले सांचे से रस निकालें 15 ग्राम रस में 15 ग्राम शहद मिलाकर खाली पेट प्रातः काल पीलें खाना पीना 2 घंटे बाद शुरू करें

दो–ढाई महीना प्रयोग करने से काया कलप हो जाता है अर्थात सभी रोगों से मुक्ति मिलती हैं

1. प्रमेह नष्ट हो जाते हैं
2. मूत्र गड़बड़ी ठीक हो जाती है।
3. सिर दर्द नहीं होगा, होगा तो ठीक हो जायेगा
4. नेत्र रोग ठीक हो जायेगा
5. नेत्र ज्योति बड़ जायेगी
6. खोई हुई रोशनी वापस आजायेगी
7. कब्ज की शिकायत दूर हो जायेगी
8. दिल दिमाग को शक्ति मिलेगी
9. नये रक्त का निर्माण होगा

परहेज–ब्रह्मचर्य का पालन, तेल मिर्च खटाई गरिष्ठ और तले पदार्थ से परहेज करें

इसके साथ आवंला या त्रिफला जल से आखों को धोते रहने से मोतियाबिन्द को आराम मिलता है।

अखरोट

सर्दी के मौसम में अखरोट नया आता है। नित्य प्रातः काल खाली पेट 3 या 4 नग फोड़ कर गिरी को खूब चबा चबाकर खाने से घुटना दर्द व कमर दर्द ठीक हो जाता है। 40 दिन तक नियमित खायें अखरोट खाने के बाद एक घंटा कुछ न खाऐं पीएं, हर साल खाने से दीर्घकाल तक घुटना दर्द व कमर दर्द होगा ही, नहीं? क्योंकि अखरोट स घुटनों व कमर को आराम मिलता है कागजी अखरोट अधिक फायदा करेगा।

अमरूद

जामफल भी सरदी के मौसम की देन है। भोजन खाने से पहले एक दो या मर्जी मुताबिक जितना भी खालें, खाकर तुरन्त भोजन करें इस में शौच साफ आयेगी कब्ज वाले तो अवश्य प्रयोग करें

बथुआ

इसी मौसम में बथुवा का साग भी मार्केट में आता है। बथुवा के साग में कुछ दाल मिलाकर सब्जी बना कर खाने पर पेट साफ आयेगा।

नीबू और नारियल का तेल

सरदी के मौसम में पैर की एड़ियां फट जाती हैं फटी ऐड़ियों पर खूब पीड़ा होती है। निबू रस की कुछ बूंदों में या आधा चम्मच में एक चम्मच नारियल तेल मिलाकर एक रसा बना कर दिन में एक दो बार फटी एड़ी पर लगाने से कुछ ही दिनों में लाभ हो जायेगा

गाजर

गाजर भी सरदी के मौसम की देन है गाजर का रस निकालकर दिन में एक बार दो बार या तीन बार पीने से नेत्रों की ज्योति खूब बढ़ जाती है चश्मा तक उतर जाता हैं रस एक कप एक गिलास या इस से भी अधिक पी सकते हैं। भोजन खाने से पहले सलाद में भी गाजर खा सकते हैं।

छुआरे

हर सरदियों के मौसम में 2 छुहारे अच्छी क्वालिटी के 200 ग्राम दूध में ऊपर की टोपी उतार कर 2–3 घंटे गरम कर शक्कर की जगह मिश्री डालकर रात में भोजन के बाद व सोने से पहले छुआरे खूब चबा कर खाकर ऊपर से वह दूध पीलें यह प्रयोग पूरी सरदी की मौसम करें। इनमें शरीर के समस्त इन्द्रियों को शक्ति मिलती है।

–संग्रहकर्ता
कृपालदास गुलवाणी 'दादाजी'
नेहरूनगर, भिलाई, दुर्ग

जीना क्यों चाहते हो ?

मैंने पूछा एक युवक से जीना क्यों चाहते हो? तुम क्या करते हो? उसने कहा मैं पढ़ता हूं मैंने पूछा क्यों पढ़ते हो? उसने कहा, पास होने के लिए। मैंने पूछा पास क्यों होना है? उसने कहा– प्रमाण पत्र पाने के लिए। मैंने पूछा प्रमाण पत्र क्यों चाहते हो? उसने कहा –नौकरी के लिए। फिर मैंने पूछा नौकरी क्यों चाहिए? उसने कहा पैसा कमाने के लिए। फिर–मैंने पूछा पैसा क्यों चाहते हो? उसने कहा खाने के लिए। मैने पूछा खाना क्यों चाहते हो। उसने कहा–जीने के लिए, फिर मैंने पूछा जीना क्यों चाहते हो यह तो मुझे पता नहीं। मेरे इस प्रश्न पर वह चुप रह गया क्योंकि इसका उसके पास कोई जवाब नहीं था। दुनिया में ऐसे लाखों करोड़ों लोग होंगे जिनके पास इस प्रश्न का कोई जवाब नहीं है और मैं तुमसे यही तो कहना चाहता हूं। कि तुम्हारे जीने का एक पवित्र उद्देश्य होना चाहिए। जीवन की एक मंजिल व लक्ष्य होना चाहिए तभी जिन्दगी के कोई मायने हैं अभी तो तुम्हारी स्थिति है कि सोमवार को जन्मे, मंगलवार को बड़े हुए, बुधवार को विवाह हुआ, गुरूवार को बच्चे हुए, शुक्रवार को बीमार पड़े, शनिवार को अस्पताल में दाखिल हुए और रविवार को चल बसे। बस यही तुम्हारी जिन्दगी का एक चित्र हैं पर ध्यान रखना यह जिन्दगी का विकृत और सबसे भददा चित्र है। इस चित्र में कोई खूबसूरती नहीं है। जिन्दगी के चित्र में चरित्र की खूबसूरती चाहिए। फूलों का सार 'इत्र' है और जीवन का सार चरित्र है। जिसने इत्र बटोर लिया उसने ज्ञान पा लिया और जिसने 'चरित्र' बटोर लिया उसने भेद–विज्ञान पा लिया। पैदा हुए और वैसे ही मर गए तो दुनिया में आने का औचित्य ही क्या हुआ। तुम्हारी देह भारत का नक्शा है। तुम अपने दोनों हाथ कूल्हे पर रखकर खड़े हो जाओ तो स्वतः ही भारत का नक्शा बन जाएगा। मैं कहता हूं कि भारत में रहने वाला हर आदमी भारत है तुम्हारा दाहिना हिस्सा राजस्थान है तो बायीं और बिहार व उड़ीसा है। पेट मध्यप्रदेश हे पैर तमिलनाडु है तो छाती उत्तरप्रदेश है। इसके आसपास ही कहीं दिल बसता है जिसको दिल्ली कहते हैं गला पंजाब है, इसलिये ऐसा लगता है पंजाब समस्या के लिए, गला घोंटा जा रहा हैं माथा जम्मू–कश्मीर है शायद इसीलिए वह आज सिरदर्द बना हुआ है तो तुम भगवान ऋषभदेव के पुत्र चक्रवर्ती भरत के संपूर्ण भारत हो।

कबीर

कबीर के जन्म के सम्बन्ध में तो सभी जानते हैं। हम यहाँ कबीर के विचारों के सम्बन्ध में कुछ विचार करेंगे। कबीर निराकार परमात्मा के उपासक थे। वे सर्वव्यापक परमात्मा को मदिरों और मस्जिदों में क़ैद नहीं करना चाहते थे।**जैसे–पत्थर पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजूं पहाड़।**

ताते तो चाकी भली, पीस खाय संसार।।

उन्होंने सभी क्षेत्रों में फैले अंधविश्वास को अपना निशाना बनाया था।

जैसे– पत्थर चूना जोड़कर मस्जिद लयी चिनाय

ता चढ़ि मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय

कबीर ने ईश्वर को पाने के लिया बाहरी आडम्बरों की जगह अपने भीतर की शुद्धता पर ध्यान देने को कहा।

जैसे– कबिरा मन निर्मल भया जैसे गंगानीर

पाछे लागा हरि फिरत कहत कबीर कबीर

कबीर ने परमात्मा को अपने अंदर ढूढंने के लिए उपदेश किया था। वे चाहते थे कि लोग पहले अपने मन से लालच, ईर्ष्या, घृणा, अंहकार इत्यादि की कीचड़ को निकाल फेंके तभी हमें परमात्मा के दर्शन होगें जैसे मैले शीशे में चेहरा साफ नहीं दिखता वैसे ही गंदे मन में परमात्मा के दर्शन नहीं होते।

औरों का पिया परदेश बसत है, लिख लिख भेजे पाती।

मेरा पिया मेरे हृदय बसत है, गूंज करूं दिनराती

बसन्त पंचमी पर विशेष

6 फरवरी 2003

वैराग्य रूपी बसन्त का आनन्द

भारत वर्ष में ग्रीष्म,वर्षा, शरत्, शिशिर, हेमन्त और वसन्त ये छः ऋतुएं प्रति वर्ष आया करती है। इन छः ऋतुओं में परमात्मा द्वारा रस भर दिया गया हैं व सभी ऋतुएं आनन्द देने वाली और मन को भाने वाली हैं। फिर भी वसन्त ऋतु की महिमा विशेष रूप से की गयी हैं। छः ऋतुओं के निचोड़ को मनुष्य शरीर में घटाते हुए गुरू महाराज जी कहने लगे कि प्रत्येक मनुष्य के जीवन में शब्द, स्पर्श, रूप, रस,गन्ध, और वैराग्य ये छः ऋतुएं आया करती हैं। वसन्त आदि ऋतुओं द्वारा मानव इतना मोहित नहीं होता जितना कि शब्द, स्पर्श आदि ऋतुओं द्वारा होता है। शब्द स्पर्शादि ऋतुओं में एक ऐसा रसीला मिठास भरा हुआ है जो इनके अभाव में वसन्तादि ऋतुएं भी फीकी सी जान पड़ती हैं।

शब्द स्पर्शादि से सर्वथा भिन्न छठी ऋतुहै–वैराग्यं। वैराग्य रूपी ऋतु जो है वह एक ऐसे आनन्द से भरपूर रहती है कि उसके आगमन की सूचना पाते ही वसन्त आदि छः ऋतुएं व शब्द स्पर्शादि पांच ऋतुएं निस्तेज व हतप्रभ होकर रह जाती है। वैराग्य ऋतु के सामने इन ऋतुओं का कोई भी महत्व नहीं रह जाता। सौभाग्यवश जिन मनुष्यों के जीवन में इस अपराजित वैराग्य ऋतु का उदय होता है उन वैराग्य प्राप्त जिज्ञासुओं को जिनका मन भंवरों के समान होता है। उनको ही वैराग्य से उत्पन्न अलौकिक सुगन्धि का अनुभव होता है। वैराग्य ऋतु में उत्पन्न हुए दैवी गुणों रूपी सुगन्धि का पान कर जिज्ञासु लोग समस्त आनन्दों की चरम सीमा को पार कर तृप्त हो जाते हैं। जैसे वसन्त ऋतु के सुहावने समय को पा कर छोटे–बड़े सभी पेड़ पौधे हरे भरे होकर नाना प्रकार के सुगन्धिमय फूलों से सुशोभित होने लगते है। वैसे ही जिज्ञासुओं के शरीर रूपी बगीचे में लगे इन्द्रियों रूपी पेड़, पौधों व लताओं में दैवी सम्पदा के शुभ गुणों रूपी फूल जो कि अभी तक कलियां ही थी वैराग्य ऋतु को पाकर, विकसित होकर लहराने लगते हैं। और जिज्ञासुओं का मन रूपी भंवरा दैवी गुणों से उत्पन्न सुगन्ध का आस्वादन कर कृतकृत्य हो जाता है। जैसे फुलवाड़ी में लगे फूल वसन्त ऋतु को पाकर प्रफुल्लित होते है। वैसे ही इन्द्रियां शुभ गुणों रूपी फूलों को पाकर खिल उठती हैं जैसे वसन्त ऋतु के प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर भंवरे मीठे स्वर में गुंजार करते हैं वैसे ही जिज्ञासु भी वैराग्य ऋतु के आकर्षक दृश्य को देखकर बहुत मीठे स्वर से राम–नाम का उच्चारण करते हैं। जैसे भंवरे पेड़–पौधों, लताओं, पत्तों, कांटों और फल–फूलों का भी परित्याग कर फूलों में छुपे सुवास को ही लेते हैं। वैसे ही जिज्ञासु भी क्षण–क्षण में बदलने वाले इस असार संसार के तमाम भागों को छोड़कर केवल सार रूपी सुवास को ही ग्रहण करते हैं। यह वसन्त ऋतु देवी–देवताओं, ऋषि–मुनियों आदि को बहुत प्यारी लगती है तो वैराग्य ऋतु जिज्ञासुओं व मुमुक्षुओं को बहुत अच्छी लगती है। जिज्ञासु लोग इस वैराग्य विभूति को पाकर सुखी हो जाते हैं। परन्तु यह वैराग्य, किसी बड़भागी को ही प्राप्त होता है। अतः मनुष्य वैराग्य रूपी बसन्त का आनन्द लेकर जीवन को सार्थक बनावें।–गुरूकृपा–श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

कैसा हो वैराग्य

वैराग्य शब्द हम सबने सुन रखा है ना। पर इसे धारण करना क्या आसान कार्य है या कठिन। यदि कठिन है तो क्यों है कठिन! इसे इस प्रकार से अपने हृदय में उतारे।

हम शरीर है या आत्मा हम सभी, राम, श्याम, मोहन सोहन सब आत्मायें हैं और आत्मा स्थिर है अतः हमें भी इस शरीर को छोड़ना पड़ेगा आत्मा के स्वाभानुसार चलना पड़ेगा आत्मा का स्वभाव न खुशी, न गम, न गर्म, न ठण्डा न तीखा न मीठा, न स्वादिष्ट, न अस्वदिष्ट। तो जब तक यह शरीर साथ है क्या ऐसा हो सकता है कि हम भी आत्मा स्वभानासार हो जायें। नहीं ना। अतः हमें क्या करना होगा? ऐसा बनाना होगा मन को, शरीर को नहीं।

तो ऐसा कब होगा कैसे हम कर पायेगें पूछे अपने आप से? तो ऐसा बिना गुरू के नाम सिमरण के अलावा नहीं हो पायेगा। जिस प्रकार वस्तु खरीदने के लिये पैसे की आवश्यकता होती है। ना उसी प्रकार से गुरू का नाम रूपी धन होता है। जिससे हम न केवल सासारिक अपितु वैराग्य ज्ञान भक्ति भी खरीद सकते हैं।

पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार ही सुख–दुःख प्राप्त होता है।

किसी नगर में सोमिल नाम का एक जुलाहा रहता था। वह राजाओं के पहनने योग्य सुन्दर वस्त्रों के बुनने में प्रवीण था, परंतु भोजन–वस्त्र आदि की प्राप्ति से अधिक धन नहीं जुटा पाता था, जबकि मोटा कपड़ा बुनने वाले मामूली जुलाहे सम्पन्न थे। इस कारण सोमिल के मन में विषाद रहता था। एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा–'प्रिये! देखो, ये मामूली कपड़े बनाने वाले कितने सम्पन्न हैं और सुन्दर, कलात्मक तथा मनोहर वस्त्रों को बनाकर भी मैं विपन्न ही हूँ। इसीलिये मैं यहां रहकर व्यवसाय करना ठीक नहीं समझता हूँ, अब मैं अन्यत्र जाकर अपना व्यवसाय करूंगा।' इस पर उसकी पत्नी ने उसे समझाते हुए कहा–स्वामिन्! धन एवं सुख तो भाग्य के अनुसार ही मिलते हैं और भाग्य पूर्वजन्म के कर्मों के अनुसार बनता है, इसलिये स्थान–परिवर्तन से सुख की आशा करना उचित नहीं। कहा भी गया है कि जो होने वाला नहीं है, वह नहीं होता। जो होने वाला है, वह बिना किसी यत्न के ही पूरा हो जाता है और जो नहीं प्राप्त होने वाला है, वह हाथ में आकर भी नष्ट हो जाता है–

नहि भवति यन्न भाव्यं भवति च भाव्यं विनाऽपि यत्ने।
करतलगतमपि नश्यति यस्य हि भवितव्यता नास्ति।।

–इसलिये यहीं पर रहकर व्यवसाय करें।

इस पर सोमिल ने कहा–प्रिये! तुमने भाग्य की बात कही है, सो तो ठीक है, परंतु बिना उद्योग किये कर्म (भाग्य) भी फल नहीं देता। भोजन के समय पूर्वकर्म के कारण प्राप्त हुआ भी भोजन हाथ की चेष्टा के बिना मुख में प्रविष्ट नहीं हो सकता। उद्योगी पुरुषसिंह को ही लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। कायर पुरुष ही दैव–दैव पुकारते हैं। दैव को छोड़कर शक्तिभर पुरुषार्थ करना चाहिये। यत्न करने पर भी यदि सिद्धि की प्राप्ति न हो तो समझना चाहिये कि यत्न करने में ही कोई त्रुटि रह गयी है। इसलिये पुनः पुनः पूर्णरूप से प्रयत्नशील होना चाहिये।

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी–
दैवं हि दैवमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः।।

–देवि! कार्य उद्योग से ही सफल होते हैं, केवल मनोंरथों से नहीं, सोये हुए सिंह के मुख में मृग प्रवेश नहीं करते। प्रयत्न किये बिना इच्छाओं की सिद्धि भी नहीं होती। आलसी पुरुष ही भाग्य के भरोसे बैठे रहते हैं। इसलिये हे प्रिये! मैं परदेश जाकर धनोपार्जन करूंगा।

ऐसा निश्चय कर सोमिल वर्धमानपुर जाकर अपना व्यवसाय करने लगा। वहां तीन वर्ष में तीन सौ सोने की मुहरें कमाकर वह अपने घर के लिये चला, पर सूर्यास्त होते–होते आधा रास्ता ही तय कर पाया। उस समय वह एक घने जंगल के बीच में था, जो भयानक और हिंसक जंगली पशुओं का निवासस्थान था। उनसे बचने के लिये वह बरगद के एक मोटे वृक्ष पर चढ़कर विश्राम करने लगा और उसे नींद भी आ गयी। आधी रात को उसने स्वप्न में दो भयंकर आकृतिवाले पुरुषों की बातचीत सुनी। उनमें से एक बोला–'हे कर्तः! क्या तुम्हें नहीं मालूम कि इस सोमिल के भाग्य में खाने–पहनने से अधिक सम्पत्ति नहीं है, फिर क्यों तुमने इसे तीन सौ सोने की मुहरें दे दीं ? इसपर दूसरे ने उत्तर दिया–'हे कर्मन्! मैं उद्योगी पुरुषों को उनके परिश्रम के अनुसार फल अवश्य दूंगा, पर इससे उन्हें सुख मिल पाना या न मिल पाना मेरा विषय नहीं है, यह तुम्हारे अधीन है।'

सोमिल की नींद खुल गयी, स्वप्न की बातों

का ध्यानकर उसने अपनी वह गठरी खोली, जिसमें उसने तीन सौ मुहरों को बांधा था। उसने देखा कि गठरी खाली पड़ी है और मुहरें गायब हैं। दुःखी हो अपने भाग्य को कोसता हुआ वह पुनः वर्धमानपुर को चल पड़ा। वहां एक वर्ष तक कठोर परिश्रम करके उसने पांच सौ सोने की मुहरें अर्जित कीं और अपने घर की और चला। इस बार तेजी से चलते हुए उसने जंगल पार किया। रात हो जाने पर भी वह रूका नहीं, अपितु चलता ही रहा। रास्ते में उसे पुनः वही दो पुरुष दिखायी दिये जिन्हें उसने स्वप्न में देखा था। उनमें से एक ने कहा–'हे कर्तः! तूने इसे पांचा सौ मुहरें क्यों दीं ? क्या तुम्हें यह मालूम नहीं कि इसके भाग्य में भोजन और वस्त्र के अलावा कुछ नहीं है।' इस पर दूसरे ने उत्तर दिया–'हे कर्मन्! मुझे उद्योगी पुरुषों को उनके परिश्रम का फल अवश्य ही देना है, अतः सोमिल को पांच सौ मुहरें देने में मेरा दोष नहीं है। हाँ,, उस धन से उसे कितना सुख मिलना है, यह निश्चित करना तम्हारा काम है।' यह सुनकर जब सोमिल ने अपनी पोटली देखी तो फिर उसे खाली पाया। निराश होकर वह प्राण त्यागने के लिये उद्यत हो गया। फांसी लगाकर ज्यों ही उसने फन्दा खींचना चाहा, त्यों ही कर्मन् (भाग्य–पुरुष) प्रकट होकर कहने लगा–सोमिल! ऐसा दुःसाहसपूर्ण कार्य न करो, क्योंकि तुम्हारे भाग्य में भोजन–वस्त्र से अधिक कुछ नहीं है। तुम्हारा पूर्वजन्म का कर्म ही तुम्हारे आज के जीवन को प्रभावित कर रहा है।

नीतिशास्त्र में कहा भी गया है–

यथा धेनुसहस्त्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्।
तथा पुराकृतं कर्म कर्तारमनुगच्छति।।

अर्थात् जिस प्रकार बछड़ा हजारों गायों में अपनी माता को पा लेता है। उसी प्रकार पूर्वजन्म में किया हुआ कर्म करने वाले के पीछे–पीछे जाता है।

इसलिये व्यक्ति को चाहिये कि वह सदा सत्कर्मों का ही अनुष्ठान करे। **–पंचतंत्र, मित्रसम्प्राप्तिः**

बसन्त ऋतु में लाभदायक सद्‌गुरु सर्वानन्द जी महाराज द्वारा बताई गई विधि

1. बसन्त ऋतु में जिज्ञासुओं को प्रातःकाल शीघ्र उठकर गुरूमंत्र का अभ्यास करना चाहिए, जिससे परमात्मा में मन शीघ्रता से लगता है। एवं सुख शान्ति की अनुभूति प्राप्त होती है।
2. बसन्त ऋतु में प्रातः काल 2–3 मील पैदल चलना चाहिये हो सके तो घर से पैदल चलकर कहीं सत्संग स्थल पर जाकर सत्संग का श्रवण करें।
3. बसन्त ऋतु में रात्रि को सोते समय खसखस, बादाम, कडु का तेल, मिलाकर मस्तिष्क की मालिश कर हल्का कपड़ा बांधकर सोवें। जिससे बुद्धि तेज व विवेक शक्ति बढ़ेगी। जिसकी स्मरण शक्ति कम हो वह 40 दिन तक इसका प्रयोग करें।
4. बसन्त ऋतु में प्रातः मक्खन में बादाम व मिश्री मिलाकर खावें। जिससे दिमाग व शरीर की तन्दुरूस्ती बढ़ेगी।
5. बसन्त ऋतु में चाय खटाई निषिद्ध पदार्थ का सेवन न करें।
6. जिस प्रकार भवंरा फूलों की सुगन्ध लेता है। उसी प्रकार जिज्ञासु रूपी भवंरा सत्संग रूपी फुलवाड़ी का अमृतपान करें।
7. बसन्त ऋतु में बादाम खसखस कडु के तेल से मालिश करें। एवं प्रतिदिन रात को बादाम पानी में भिगोकर रखें। प्रातःकाल बादाम के छिलके उतारकर प्रतिदिन खायें। जिससे विवेक शक्ति स्मरण शक्ति शरीर की तन्दुरूस्ती बढ़ेगी। (बच्चों की स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिये इसका 40 दिन तक प्रयोग करें।

–संकलन

भारती दन्तवानी, जयपुर

त्रिवार्षिक दिन दर्शक 2002 से 2004 तक का कलेण्डर

नव वर्ष मंगलमय हो स्वागतम् 2003	2003	सितम्बर दिसम्बर	अप्रैल जुलाई	जनवरी अक्टूबर	मई	अगस्त	फरवरी मार्च, नवम्बर	जून
	2002	अप्रैल जुलाई	जनवरी अक्टूबर	मई	अगस्त	फरवरी मार्च, नवम्बर	जून	सितम्बर दिसम्बर
	2004	मार्च नवम्बर	जून	सितम्बर दिसम्बर	जनवरी, अप्रैल जुलाई	अक्टूबर	मई	फरवरी अगस्त
1 8 15 22 29		सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
2 9 16 23 30		मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार	सोमवार
3 10 17 24 31		बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार	सोमवार	मंगलवार
4 11 18 25		गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार
5 12 19 26		शुक्रवार	शनिवार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार
6 13 20 27		शनिवार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार
7 14 21 28		रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार

जादुई कलैण्डर, 2003

वर्ष 2003 के किसी भी माह की कोई भी तारीख का वार इस प्रकार भी ज्ञात किया जा सकता है। आप सिर्फ सितम्बर-अक्टूबर में 0, अप्रेल-जुलाई में 1, जनवरी-अक्टूबर में 2, मई में 3, अगस्त में 4, फरवरी-मार्च नवम्बर में 5, जून में 6 अंको को याद रखें यही वे संख्याऐं है जिनके माध्यम से आप अपने मित्र को आसानी से बता सकते है कि वर्ष 2003 के किस माह की कौन सी तारीख को कौन सा वार है।

उदाहरणः आपके मित्र ने आपसे पूछा 15 अगस्त 2003 स्वतंत्रता दिवस किस वार को हैं तो आप अपने मन में 15 अगस्त में अगस्त के 4 अंक जोड़ दें। इस तरह 15+4 = 19 हुआ क्योंकि सप्ताह में 7 दिन होते हैं। अतः कुल योग 19 में से 7 का भाग दे देवें 2 बार गया शेष 5 बचा। आप मित्र को तुरन्त बता दे कि 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस इस वर्ष शुक्रवार को होगा। मित्र सही हल पाकर दंग रह जायेगा और आपको जादूगर मान बैठेगा। शुक्रवार की तरह यदि शेष 0 बचे तो रविवार, 1 बचे तो सोमवार, 2 बचे तो मंगलवार, 3 बचे तो बुधवार, 4 बचे तो गुरूवार, 5 बचे तो शुक्रवार, 6 बचे तो शनिवार होगा।

इसी तरह से आप अपने जन्म दिन 2003 का वार एवं गणतंत्र दिवस का वार भी ज्ञात कर सकते हैं।

प्रेषक-अर्जुनदास

यात्रा द

सत्संग ज्ञान चर्चा

सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व सन्तमण्डली का देशाटन

प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर वार्षिकोत्सव व गीताजयन्ती महोत्सव में दिव्य सत्संग सभ

सदगुरू स्वामी टेऊँराम, प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हास नगर–5, जिसका उद्‌घाटन सत्‌गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के कर कमलों से सदगुरू स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज द्वारा कराया गया था, की स्थापना का वार्षिक महोत्सव 5 से 9 दिसम्बर 2002 तक बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया गया। श्री प्रेमप्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरूवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज सन्त मण्डली के साथ महोत्सव में सम्मिलित हुए।

5 दिसम्बर सांयकाल सत्संग सभा में भक्त मूलचन्द सन्त श्री मुक्त के भजनों व सन्त हरीओमलाल के प्रवचनों के पश्चात पूज्य सत्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने पूज्य श्री गुरूदेव भगवान के मुखारबिन्द द्वारा गाये हुए भजन से सत्संग आरम्भ किया।

मुहिंजी रसना जपि तूं राम, तहिंमे तुहिंजो आ भलो

परमात्मा की कृपा से मानव जीवन सन्त कृपा से सत्संग गुरूकृपा से नाम का उपदेश प्राप्त हुआ जिसका स्मरण मन की एकाग्रता से करने पर परमात्मा को पाया जा सकता है। स्वाँसों की महता को बताते हुए कहा कि **स्वाँस –स्वाँस स्मरण करो वृथा स्वांस मत खोय** संसार के पदार्थों को नश्वर बताते हुए कहा कि **धन योवन यो जांहिगो जैसे उड़त कपूर नारायण गोविन्द भज क्यों चाटे जग धूल** अन्त में बताया कि यह गुरू महाराज का स्थान तपस्थली है। आज ये सब शक्ति व भक्ति का प्रताप जो आप देख रहे हैं। सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के चरन शरण में रहकर सतगुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज ने भी पूर्ण पद की प्राप्ति की जिसे सुनकर सारे आश्रम में बैठे प्रेमी भक्तो ने जयघोष के साथ तालियां बजाई।

पूज्य स्वामी देवप्रकाश जी महाराज जी ने अपने प्रवचनों में बताया कि आप सब को धन्यवाद है आप सत्संग सुन रहे हैं वह समय क्षण स्वास सफल हैं जिसमें ईश्वर का स्मरण होवे गुरू कृपा से यह बात सुगमता से होती है। सन्त वाणी से जो बताते है वह उनकी अनुभव की हुई होती है पहले वह स्वंय अपने जीवन में अपनाते हैं। सन्त वचन से शीतलता मि है, चिंताए, कष्ट दूर होते है।

भजनः **मुंहिजी सतगुरू सुणु वेनती**
कीअं रामु मिले मूंसा
दसि गुरू उहा युक्ति
सिर झुके तो आसान जब दिल भी झुका हो
आशीर्वाद दुआ दिल से होती है न कि जबान
तीर हाथ से चलता है, ना कि कमान से

सन्तों के सत्संग का फल है अंहकार मिट ज आज हमें खुशी है आप भी खुश है। स्वामी भगतप्रक जी महाराज सन्त मण्डली साथ लेकर आये हैं अमरापुर जयपुर से विद्यार्थी भी आये हैं, भजनों द्वा आपने आनंद लिया ऐसा आनंद सदैव आकर देवें कृपा हमारे गुरूदेव जी की है इतना सुनकर स प्रेमियों ने जयघोष के साथ तालियां बजाई। सतगु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के प्रवचनो की न कैसिट्स को स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व स मण्डल के कर कमलों से जारी किया गया।

शोभायात्रा 6 दिसम्बर 2003 इस हस्त लेखनी ताकत नहीं है कि वर्णित करे या लिखे, आच सतगुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज, संतगुरू स्वा सर्वानन्द जी महाराज व सतगुरू स्वामी शांति प्रक जी महाराज की सुन्दरतम झांकियां व छोटे–छोटे स मण्डली के स्वरूप सुन्दर रथो में विराजमान स शिरोमणि पूज्य स्वामी देवप्रकाश जी महाराज के स पूज्य स्वामी स्वयं प्रकाश जी महाराज, स्वामी जगदी मुनि व दूसरे रथ में पूज्य सतगुरू स्वामी भगतप्रक जी महाराज, सन्त श्री नामदेव, सन्त हरीओमलाल सन्त दयाप्रकाश जी महाराज शोभायमान थे।

चल समारोह मार्ग में स्वामी टेऊँराम चौक स्वामी शान्ति प्रकाश चौक पर स्थापित सदगुरू महार की प्रतिमाओं पर पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डल द्व माल्यार्पण किया जाकर प्रतिमा पर पुष्प वर्षा की गय स्वामी शान्तिप्रकाश प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र पर स्व

जी व सन्त मण्डली का हार्दिक स्वागत किया गया। ज्ञातव्य है कि पूज्य सदगुरू महाराज जी की आशीर्वाद से इस केन्द्र पर प्रतिदिन सैकड़ों रोगी आकर अपने रोग का निदान करवाकर, निरोगी होकर अपना जीवन सुखमय बनाते हैं।

अहमदाबाद में सत्संग की मौज
(8 से 10 दिसम्बर 2002)

अहमदाबाद। अहमदाबाद में पूज्य गुरूवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज सन्त मण्डली सहित पधारे जहां कि सदगुरू महाराज जी के अनेक प्रेमी भक्त रहते हैं। आज गुरूदेव भगतप्रकाश जी महाराज के स्वागत हेतु कई भक्त स्टेशन पर हाथों में हार लेकर प्रतीक्षित थे, गाड़ी स्टेशन पर रूकते ही सर्व गुरूदेव आचार्य जी की जयघोष की आवाज सुनने में आई आनन्द की लहर हर प्रेमी के दिल में छायी थी पूज्य स्वामी जी भक्तों को दर्शन के साथ अमृत का पान कराने दिल में प्रभु का प्यार जगाने संसार के भूले भटके लोगों को राह लगाने हेतु पधारे, अहमदाबाद के मणीनगर में दादा दौलतराम जेठानन्द रामचंदानी के घर–पर भोजन व भजन का कार्यक्रम रहा। इसी दिन स्वामी टेऊँराम सेवा मंडल द्वारा मासिक सहायता गरीबों को दी जाती है। वहाँ पधार कर पूज्य स्वामी जी के कर कमलो से ग़रीबों को दाल गेहूं कैश नमक घी शक्कर इत्यादि कई वस्तुएं प्रदान की गयीं, धन्य है ऐसे प्रेमी भक्त जो कि अपने गुरूदेव प्रभु के प्यारों गरीब जरूरतमंदों की सभाल करते हैं। इन प्रेमियों पर पूज्य गुरूवर सतगुरू शांतिप्रकाश जी महाराज की शिक्षा की ओर ध्यान व निर्भरता है। जैसा कि वे कहते थे।

या तो आत्मज्ञान हो या परउपकार
टेऊँ जिसमें ये नहीं मानुष सो बेकार

इसी प्रकार प्रेमियों के प्यार को देखते हुए आचार्य सतगुरू टेऊँराम ज़ी महाराज के स्थान बसंत कुटीर में बहिन पुष्पा के यहां सत्संग का कार्यक्रम रहा जहां पर सैकडों प्रेमियों ने सत्संग दर्शन का लाभ लिया, तत्पश्चात दूसरे दिवस पर सतगुरू टेऊँराम जी महाराज प्रेम प्रकाश आश्रम अम्बावाड़ी, जहां पर पूज्य सन्त स्वामी ऊधवदास जी महाराज ने आश्रम स्थापना किया था जहां पर कई प्रेमियों ने सत्संग का आनन्द लिया, जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश से समस्त संसार रोशनी से प्रकाशित होता है। आज मानों सारा आश्रम सारी दिशा चारो कोनों में वो आनन्द की लहर का प्रकाश छाया हो, सतगुरू महाराज के अनन्य प्रेमी सेवक भक्त दादा जवाहरलाल के साथ अनेक प्रेमियों ने मिलकर स्वामी सर्वानन्द सोसायटी में भी सत्संग कार्यक्रम का विशाल आयोजन रखा था जहां दूर–दूर के प्रेमियों ने आकर प्रातःकाल व सायंकाल सत्संग का लाभ प्राप्त किया। पूज्य स्वामी जी के साथ सन्त परसराम सन्त हरीश कुमार सन्त श्री मुक्त भक्त मूलचन्द, सन्त हरीओमलाल व सन्त श्री नामदेव भी पधारे। सन्त परसरामः

जेसी गंगा जमुना में पानी रहे
स्वामी टेऊँराम तव्हाजी कहाणी रहे।

सन्त हरीओमलाल ने भी अपने प्रवचन में गुरू महिमा का वर्णन करते हुए बताया

जा से तुमने गुण को पाया तांको गुरू कर मानो
ज्ञान ध्यान जिस भक्ति दीनी सतगुर वही उदारा।

आगे आचार्य जी ने अपनी अमृत वाणी में कहा है। कि–

गुरू बिना रंग न लागही, गुरू बिना ज्ञान न होय
कहे टेऊँ सतगुरू बिना मुक्ति न पावें कोय।

संसार में गुरू की महिमा अनन्त हैं। जिसका कथन करना कठिन है

गुरू ईश्वर रवां वधि आहे, ईएं शास्त्र वेद सुणाए
सभु सन्त चवनि कुल महन्त चवनि नरनारी

सन्त श्री नामदेव जी ने इसी प्रसंग को आगे चलाते हुए निम्नांकित भजन गाया **स्वामी टेऊँराम जग में वाह जा कई कमाई** पूज्य गुरूवर सतगुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने राम नाम कीर्तन करते हुए निम्न दोहे से सत्संग आरम्भ किया

निश्चल मन से मिलत है, निश्चल आत्म राम
टेऊँ मन निश्चल करे, पाओ सुख का धाम
औखी सोखी है प्रीतम प्यारा
पंहिजी तोड़ि निभाय
तेरे मन कुछ और है हरि के मन कुछ ओर
हरि के मन की होन दें मति मचावे शोर
अब तो प्रभु है मर्जी तेरी ले जाओ जिस ओर
तुम जहां सुख है वहां तुम बिन नहीं आराम

दिल में हो तस्वीर तेरी होठों पे तेरा नाम

अब सौप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में

संसार के पदार्थ भले न हो परन्तु भाव हावे प्रेम का अंकुर जाग्रत होने पर परमात्मा से अवश्य मिलाप होगा गुरू कृपा से।

बड़ौदा में गीता जयन्ती महोत्सव

(18 से 19 दिसम्बर 2002)

बड़ौदा। सन्त कंवर कालोनी स्थित मीरा कृष्ण मंदिर में गीता जयन्ती महोत्सव पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में मनाया गया। पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का संत नामदेव जी, संत हरीओम प्रकाश जी, संत दयाप्रकाश जी, सन्त नन्दलाल जी, सन्त श्री मुक्त जी, भक्त मूलचन्द जी के साथ बड़ौदा पहुंचने पर भव्य आत्मीय स्वागत किया गया। सन्त कंवर कालोनी स्वामी टेऊँराम चौक पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु पूज्य स्वामी जी के दर्शनों के लिये उपस्थिति थे, यहां से गुरूदरबार के दर्शन करते हुए पूज्य स्वामी जी को एक शोभायात्रा में मीरा कृष्ण मंदिर लाया गया। इस महोत्सव में बड़ौदा के समीपस्थ क्षेत्रों के भी प्रेमीगण बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए।

महोत्सव के अन्तर्गत आयोजित विशेष सत्संग सभाओं में संत हरीश कुमार सन्त नरेशलाल जी ने भी गुरूदेव जी की महिमा के भजनों से सारी संगत को आनन्दित किया। सन्त नामदेव जी महाराज ने अपने प्रवचन में निम्न दोहे से सत्संग का सार बताया।

सबुर शुक जिस जन करा तजे तन अभिमान

कहे टेऊँ तां पर सदा प्रसन्न हो भगवान

द्रोपदी की लाज भगवान श्री कृष्ण द्वारा नहीं अपितु उनके कर्म जो कि अपनी साड़ी का टुकड़ा फाड़कर ऋषि की लाज रखी शुभ कर्म व ईश्वर प्रेम साथ–साथ ज्ञान में स्थिति हो जावे जिससे मन शांति हो जावे चुप जैसी मीठी वस्तु ना है इस जग मांहि, सन्त हमारे सच्चे हितकारी हैं, तत्पश्चात् सतगुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने प्रेमियों को अमृतपान कराते हुए कहा कि शरणागत होने से मन के ऊपर दुखो का बोझ नहीं रहता संसार में रहते हुए दुख व सुख आते रहते हैं। गीता ग्रंथ सर्व शास्त्र सार भगवान के मुख की उच्चारण वाणी अर्जुन ने युद्ध संग्राम में ही सुनी जिससे शोक व मो छूटकर निसंदेह हो गया शुकदेव स्वामी ने भा कथा अमृत राजा परीक्षित को सुनाया जिससे भय से मुक्त हो। राजा परीक्षित शरीर के आसक्ति से दूर हुआ। आगे प्रसंग में मन चचलत शांति हेतु अभ्यास वैराग्य का साधन बतलाय जितना प्रभु समर्थ है उतना ही हम उनसे पा अभिलाषा रखें **जेदो तुहिंजो नाऊं तेदी तोखां बाझ** भगवान गुरूदेव से सुमति व सदबुद्धि के लिये प्र करते रहें।

उज्जैन में निर्माणाधीन प्रेम प्रकाश आश्रम का अवल

(20 दिसम्बर 2002)

उज्जैन। निर्माणाधीन प्रेम प्रकाश आश्रम में कारों द्वारा प्रेमियों का आगमन व टैन्ट में सजे स मण्डप व साथ–साथ भजन भोजन का आनन्द कुंभ मेले का समागम प्रतीत हो रहा था। उज्जै इन्दौर प्रेमियों के हृदय में वो आनन्द की उमंगें रही थी, जब सन्त मण्डली के साथ पूज्य गुरूवर भगतप्रकाश जी महाराज पधारे, उस स्थान का अवल किया, उपरान्त जब सत्संग का आरम्भ हुआ मानो प्रतीत हो रहा था कि पेड़ पौधों के साथ धरती अ चारो ओर सतगुरू टेऊँराम की अमर भक्ति शक्ति साक्षात प्रतिबिम्ब था जैसा कि टंडे आदम अमरापु स्थान हो। पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी मह ने अपने अमृत वचनों का प्रारम्भ **गोविन्द जो थी मिठो** भजन से सत्संग प्रारम्भ करते हुए कह संसार का सुख क्षण भंगुर है अपितु परमात्म स्मरण आनन्द हमेशा स्थिर सच्चा आनन्द का कुछ और मीरा भक्तिन स्त्री वेश में प्रभु स्मरण आनन्द पाकर अपने आप में खो गई जैसे बुखार पर मीठी वस्तु भी मन व मुख को नहीं भाती विषयों का सेवन करने में परमात्मा के नाम का अ में मन को वह स्वाद नहीं आता है। **विषयानन्द है भजनानन्द हरीदास ब्रह्मानंद जीवन मुक्त भई** **नास** इन्दौर आश्रम पर शाम 3 बजे पहुंचकर 5 बजे तक सत्संग कर प्रेमियों को दर्शन सत्संग आनन्द देते हुए शनिवार जयपुर पहुंचे।

अजमेर सत्संग समाचार

गीता जयन्ती महोत्सव शीतल गीता मंदिर अजमेर में सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का भव्य स्वागत

सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज के परम शिष्य पं. शीतल दास की कर्मभूमि शीतल गीता मन्दिर अजमेर में आयोजित गीता जयन्ती महोत्सव दिनांक 15.12.02 में प्रेमप्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के पधारने पर पं. श्री भीष्म देवजानी गीता मन्दिर अजमेर पं. बृजमोहन व्यास, श्री नारायणदास रतनानी ट्रस्टी प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्श नगर अजमेर, भगत किशन शंकर नारवानी एवं ब्यावर से पधारे सुन्दरदास डेटानी, नानकराम, उद्धवदास दादी रूक्की, दादी सत्ती, एवं पधारे असंख्य प्रेमियों ने फूलों व माल्यार्पण से स्वागत किया। पं. श्री भीष्म देवजानी ने अपने अमेरिका संस्मरण में प्रेमियों को बतलाया कि जिस प्रकार सद्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज ने प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की स्थापना कर इसे लोक कल्याण जनहित के उत्थान एवं धर्म की रक्षा हेतु सत्संगों के माध्यम से देश विदेशों में प्रेम प्रकाश मण्डल का प्रचार कर इस मनुष्य जीवन को आवागमन के चक्कर मिटाने हेतु नाममंत्र शिवोऽम शिवोऽम सतनाम साक्षी देकर उद्धार किया उसी तरह मण्डलाध्यक्ष सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने अपने संत मंडली के साथ गत 4–5 महीनों में अमेरिका स्पेन, दुबई, हांगकांग जकार्ता मनीला आदि देशों में बसे प्रेमियों को भी अपने पावन दर्शन देकर सद्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज के महिमा का गुणगान कर प्रेमप्रकाश सम्प्रदाय का झण्डा पृथ्वी के एक किनारे से दूसरे किनारे तक फहरा कर प्रेमियों को भौतिकता से हटाकर वास्तविक आत्मज्ञान स्वरूप के ज्ञान की ज्योति उनके मन में प्रज्वलित कर ज्ञान शिक्षा सत्संग का लाभ प्रदान किया हैं।

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के साथ, सन्त दयाप्रकाश, संत नन्दू प्रेमप्रकाशी, संत परसराम प्रेमप्रकाशी, संत हरीश प्रेमप्रकाशी, भगत मूलचन्द समस्त संत मण्डली ने गीता जयन्ती पर अपनी अमृतवाणी से उपस्थित प्रेमियों को सत्संग में मंत्र

प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्श नगर अजमेर में सामूहिक विवाह समारोह सम्पन्न

परम पूज्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जनकल्याण एवं परोपकारी उपदेशों पर स्वामी माधवदास जी महाराज की तपो भूमि प्रेमप्रकाश आश्रम आदर्शनगर अजमेर में सन् 1996 से ब्रह्मलीन स्वामी मुरलीधर करनानी द्वारा आरम्भ किये गये यज्ञ को श्री ठाकुर दास पंजाबी, शंकर सामतानी, टीकमदास पंजाबी, दीपावासी व श्री नारायणदास रतनानी ट्रस्टीयों द्वारा 14 वां सामूहिक विवाह समारोह दिनांक 1.12.02 को सद्गुरू महाराज की कृपा से सम्पन्न हुआ। इस विवाह समारोह में राजस्थान गुजरात मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश के निर्धन सिन्धी परिवारों की 24 कन्याओं को आश्रम द्वारा, 40 हजार का प्रत्येक कन्या को, जेवर, घरेलू, सामान आदि देकर उनका विवाह हिन्दू रीति रिवाज से यज्ञ करवाकर आश्रम में सम्पन्न करवाया। इस सामूहिक विवाह समारोह में वर–वधु के मेहमानों सहित लगभग 5000 प्रेमियों को विवाह का भोजन ठहरने की व्यवस्था आश्रम द्वारा की गई। उक्त 24 जोड़ों को संत अनन्त प्रकाश (पूना), संत चेतनकृष्ण (ग्वालानन्द दरबार अजमेर) ने सद्गुरू महाराज की तरफ से आशीर्वाद देकर कन्याओं को उज्जवल दाम्पत्य जीवन का आशीर्वाद प्रदान किया। इस सामूहिक विवाह समारोह यज्ञ में अजमेर क्षेत्र के विधायक नानकराम जगतराय शंकर नारवाणी एवं अनेक प्रेमियों ने सेवाकर सद्गुरू महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया।

मुग्ध कर दिया था।

सद्गुरू महाराज ने गीता जयन्ती महोत्सव पर सद्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज की महिमा का वर्णन कर अपनी अमृतरूपीवाणी में बतलाया कि सद्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज ने बचपन से ही जंगलों शमशानों में तपस्या कर वैराग्य धारण कर श्रीमद् भगवत् गीता का सार समझकर अपनी अमृतवाणी में श्री प्रेमप्रकाश ग्रन्थ की रचना की जिसमें गुरू महाराज ने अपनी अमृतवाणी में बतलाया कि–

दोहाः– कहे टेऊँ संसार में बात यही है सार।
भजन करो भगवान का छोड़ो विषय विकार।।

दोहाः– हिक गाल्हि बुधु ध्यान धरे।
जेको जाओ आहे सो अवस मरे।।

चौपाईः– गुरू बिना होय न आत्मज्ञान,
गुरू बिन मिटे न तन अभिमान।
गुरू बिन संशय भ्रम न जावे
गुरू बिन कबंहु शान्ति न पावे।।

स्वामी जी ने बतलाया कि श्रीमद् भगवत् गीता में श्री कृष्ण भगवान ने अर्जुन को स्पष्ट बतलाया कि जो जीव इस संसार में पैदा हुआ है उसका मरण अवश्य होगा। अतः हमें संसार के भौतिक सुख मोह माया त्याग कर गुरू की शरण में जाकर गुरू द्वारा दिये गये नाम का सुमरन कर प्रभु परमात्मा की प्राप्ति करनी चाहिये। गुरु महाराज ने आगे अमृतवाणी में हमें बतलाया कि हमें मनुष्य चोला मिला है यह बहुत ही दुर्लभ प्राप्त होता है। हमें संतों का संग मिला संतों से नाम मंत्र का दान मिला फिर भी मन नाम से जुड़ता ही नहीं, जैसे अर्जुन ने श्रीकृष्ण भगवान से गीता में पूछा था कि मन बड़ा चंचल है जो इधर–उधार भटकता है मन एकचित कैसे होगा तब श्री कृष्ण भगवान ने अर्जुन को कहा है अर्जुन मुझे गुरू मानकर मेरे में ध्यान धर कर मन बुद्धि मुझको अर्पण कर इस मोह माया संसार से मोह छोड़कर मुझे में ध्यान धर, क्योंकि जो जीव इस जगत में पैदा हुआ है उसका मरण अवश्य होगा जो मेरे इस विशाल रूप को देखकर समझ ले कि इन्हें मैने पहिले ही मार दिया है। तुम केवल निमित मात्र हो। उसी तर[ह] गुरू की शरण में जाकर सब कुछ गुरू को अर्प[ण] भौतिक सुखों, मोह माया ममता को त्याग क[र] एकचित कर गुरू द्वारा बतलाये गये नाम सुम[रन] सदैव ध्यानस्थ रहकर आत्म ज्ञान की प्राप्ति [करनी] चाहिये। गुरू के बिना आत्मज्ञान की प्राप्ति नही[ं] है। बिना आत्मज्ञान के अनात्म देह का अ[...] संशय भ्रम दूर नहीं होगा। बिना भ्रम संशयों [...] हुए सुख शान्ति की प्राप्ति नहीं होगी और नह[ीं] प्राप्त होगा। अतः हमें गुरू का संग करना [...] गुरू के संग से वैराग्य उत्पन्न होगा। तब गुरु[...] से हमारा ध्यान भौतिक सुखों से हटकर प्रभु प[...] के नाम सुमरन में एकाग्रता से लग जायेगा। [...] और अंधकार हमारे जीवन से समाप्त होकर [...] पास ऐसा आत्म ज्ञान रूपी धन इकटठा हो [...] जो लोक परलोक दोनों में काम आयेगा।

भजन–मुंहिजों मन विषयुनि खे छदे तुंहिजे ध्यान में [...]
तुंहिजे स्मरण ऐं चिन्तन जीवन में लग्न रहे[...]
भली सुधि तन मनजी वञें अहिड़ों प्रेम जो प्यारि[...]
गुरूदेव मिठा मनठार मुंहिजा सद्गुरू टेऊँ[...]
ईहा दया कयों मूंते नितु जपिया त्वहांजों नामु।

पूज्य स्वामी जी ने आगे बतलाया [कि] श्रीमद् भगवतगीता प्रेमप्रकाश ग्रन्थ के उपदे[श] पालन कर एवं संतों महापुरूषों द्वारा बतला[...] मार्ग पर चलकर भजन भक्ति कर संसार के भ[...] से पार पहुंचकर प्रभु परमात्मा को प्राप्त कि[...] सकता है। इसी के साथ सद्गुरू महाराज ने [...] पाकर सत्संग समारोह का समापन कर रात्रि [...] संत मंडली के साथ जयपुर के लिए प्रस्थान [...]

प्रेम प्रकाश आश्रम दिल्ली गेट अजमे[र] स्वामी बसन्तराम जी महाराज की 22 वीं पुण्यतिथि सम्पन्न

परम श्रद्धेय सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी म[हाराज] के परम शिष्य वेदान्त केसरी स्वामी बसन्तर[ाम] महाराज की बाईसवीं पुण्य तिथि दिनांक 16.1[2...] 20.12.02 तक प्रेम प्रकाश आश्रम दिल्ली गेट [...]

में संत शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री के पावन सानिध्य में सम्पन्न हुई। इस पुण्य तिथि पर स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज बडौदा संत राजूराम, संत मोहन प्रेमप्रकाशी संत दिलीप प्रेमप्रकाशी एवं विभिन्न संतों ने पधार कर अपने प्रवचनों एवं अमृतवाणी से प्रेमियों को लाभन्वित किया।

आश्रम में दिनांक 16.12.02 को झूलेलाल साहब की ज्योति प्रज्वलित की गयी, स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री ने दिनांक 18.12.02 को 71 सामूहिक यज्ञोपवीत जनेऊ संस्कार हिन्दू रीति रिवाज से सम्पन्न कराये। इस पुण्य तिथि पर अनेक प्रेमियों ने श्रीमद् भगवद् गीता के पाठ भी रखवाये।

पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री ने सद्गुरू टेऊँराम महाराज व स्वामी बसंतराम महाराज की महिमा का गुणगान करते हुए अपनी अमृतरूपीवाणी में बतलाया कि माता कृष्णा ने पवित्र व्रत रखकर संतों की सेवा कर सद्गुरू टेऊँराम महाराज जैसे पुत्र की प्राप्ति की, पुत्र को अच्छे–अच्छे उपदेश शिक्षाऐं देकर बचपन से ही वैराग उत्पन्न कर सद्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज ने सत्मार्ग ग्रहण किया। बचपन से ही सद्गुरू महाराज ने घर परिवार छोड़कर जंगलों शमशानों में तपस्या कर ब्रह्मस्वरूप प्रभु परमात्मा को प्राप्त करने का मार्ग खोजकर हमें अपनी अमृतवाणी प्रेमप्रकाश ग्रन्थ सोलह शिक्षाओं में उस मार्ग पर चलने, पालन करने हेतु उपदेश दिया है, स्वामी जी ने भजन द्वारा बतलाया कि

भजन–सच्ची माता पुटन खे पिण सच्चो इंसान बणाए थी।
देई उपदेश नढपिण में सच्चो गुणवान बणाए थी।

अर्थात सत्य के मार्ग पर चलने वाली माता–माता कृष्णा की तरह अपने पुत्रों को बचपन में ही अच्छी ज्ञान शिक्षा देकर गुणवान बनाती है। स्वामी बसंतराम बचपन में जब सद्गुरू महाराज के संग में आये तो उन्होनें अपने माता पिता की आज्ञा लेकर सद्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज से नाम दान लेकर शिष्य बन गये और उन्होंने बचपन में ही माया मोह ममता त्याग कर गुरू द्वारा बतलाये गये नाम में वृति रख कर प्रभु परमात्मा को प्राप्त किया।

भजन: स्वामी बसंतराम ज्ञानी हुयो निर्मोही निर्मानी हुयो।
नंडपण खां रखी नाम में वृति, छदियाई जगत जो लाड़ो।
मोह ममता खां करे किनारो कयड़ो खे प्यारो।
सदा आत्म अन्तर ध्यानी हुओ।

स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज ने अपने संत मण्डली के साथ सद्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज एवं स्वामी बसंतराम महाराज के प्रेम सेवा त्याग आदि पर गुणगाान कर अपनी मधुर वाणी में प्रेमियों को बतलाया कि

भजन– जगत में सन्त पूरण से नजर सां निहालु कनि जेई।
सुधारनि जीव जगतर जा सची सुन्दर शिक्षा देई।।
भजन– मेरे स्वामी टेऊँराम कभी आ कण्ठ लगाओगे
करूं याद सुबह और शाम कभी आ दरस दिलखाओगे।

स्वामी जी ने सद्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज एवं स्वामी बसंतराम महाराज की महिमा बतलाते हुए बताया कि यदि किसी पर सद्गुरू महाराज की एक बार कृपा दृष्टि हो जाये तो वह इस भवसागर से पार हो जायेगा। संतों के संग से वैराग्य उत्पन्न होता है। और श्रद्धा से संत गुरूदेव हमारे 3 दुख, शरीर दुख, मन के दुख, प्रकृति दुख का नाश कर देते हैं सद्गुरू ने बचपन से ही अपने स्वरूप को पहचानकर प्रभु परमात्मा को प्राप्त करने का मार्ग खोजकर हमें नाम मंत्र द्वारा उसे पाने का उपदेश दिया। गुरू महाराज ने हमें अपनी सोलह शिक्षओं में बतलाया कि जिस मनुष्य में सच्ची श्रद्धा होगी। मन में प्रभु को प्राप्त करने का दर्द होगा उसे अवश्य ही भगवान की प्राप्ति होती है। आज भी हम यदि सद्गुरू महाराज में पक्का विश्वास श्रद्धा एवं मन में दर्द लेकर याद करेंगे तो सद्गुरू महाराज हमारे दुख दूर करने अवश्य आते हैं इस पर स्वामी ब्रह्मानन्द महाराज ने बतलाया कि जब आश्रम में 2–2 ट्यूबवेल खुदवाये तो दोनों ट्यूबवेल में खारा पानी निकला जिससे खारापानी हानिकारक होने के कारण ट्यूबवेल बन्द करवा दिये कुछ महीनों बाद सद्गुरू महाराज का आषाढ़ माह जून में जन्मोत्सव था बहुत से प्रेमी आश्रम में बाहर

से आये हुए थे, पानी की किल्लत थी। स्वामी टेऊँराम महाराज को अरदास कर प्रार्थना की, पानी के टयूबवेल का पानी गुरूदेव मीठा कर दो दूसरे दिन सुबह अचानक नल वाला आश्रम आया स्वामी जी को रात वाली अरदास का ध्यान आया उन्होंने उसे कहा कि बन्द पड़े ट्यूबवेल खोलो इन में गुरू महाराज ने जल मीठा कर दिया है। जैसे ही उन्होंने टयूबवेल खोले और पानी चखा तो पानी मिश्री की तरह मीठा निर्मल, जो 2 टयूबवेल आज भी आश्रम में मौजूद है और मीठा पानी निकलता है। इस प्रकार सद्गुरू महाराज को सच्ची श्रद्धा विश्वास मन में दर्द लेकर याद करो तो सद्गुरू महाराज दुख दूर करता है।

स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज ने स्वामी बसंतराम महाराज एवं सद्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज की सेवा कार्य के बारे में बतलाया कि सिन्ध पाकिस्तान में पंडित शीतलदास के गांव का एक बुजुर्ग प्रेमी अतिसार पतले दस्त के रोग से अत्यन्त बीमार हो गया उसके घरवाले इसकी सेवा करने में असमर्थ हो गये वे उस बीमार अतिसार के रोगी को सद्गुरू टेऊँराम महाराज के आश्रम दरबार में लाये। सद्गुरू महाराज को सबसे पहिले स्वामी बसतराम जी ने कहा कि कि मैं इस रोगी की सेवा करूंगा। स्वामी बसंतराम महाराज ने उसरोगी की सेवा कर उसे जीवन दान दिया ऐसा उन्होंने अनेकों रोगियों दुखियों की सेवा कर उन्हें नया जीवन दान दिया। जिसपर सद्गुरू महाराज ने स्वामी बसंतराम महाराज को वेदान्त केसरी की उपाधि प्रदान की।

सद्गुरू महाराज स्वयं भी प्रेम, त्याग की मूर्ति थे। प्रतिदिन सद्गुरू महाराज भोजन बनावाकर आस–पास के खेतों में काम कर रहे मजदूरों को भोजन खिलवाकर सेवा कार्य करते थे। गरीब असहाय दीन दुखियों की मदद भी करते थे।

स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने बतलाया कि आज के समय में माता पिता को अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा ज्ञान देना चहिये अच्छे–अच्छे संस्कार बच्चों में डालना चाहिये ताकि वो बड़े होकर अच्छे बनें। गुरू द्वारा बतलाये गये मार्ग पर चलना चाहिये उनके उप का पालन करना चाहिये। सेवाकर्म करना भी हो या नीच सेवा कार्य सेवाकर्म सदैव उच्च ही प्रतिदिन सुबह शाम सत्संग भजन करके गुरू के का सुमरन करना चाहिये। हमें भौतिक सुखों मायां ममता को त्याग कर गुरू की शरण में ज नामं वृति लगाकर सच्चिदानन्द परमात्मा रूप प्राप्त करना चाहिये।

भजन– शान्तीय जो हणु छंडो सतगुरू सांई शांतिअजो हणु

शान्ती अचे जीअं मन मुंहिजे, किर–किर जो कदु

सद्गुरू मुंखे शान्तीअ जो हणु छंडो।

इस भजन को स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री गाकर पल्लव पाकर सारे उपस्थित प्रेमियों को आश देकर वर्सी महोत्सव दिनांक 20.12.02 को स किया।

–मोहन शिवनानी, अजमे

शोक समाचार

दादा ढालुराम वसन्दानी अमरापुर धाम सिध

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल श्री अमरापुर स्थान वयोवृद्ध वरिष्ठ सेवादारी श्री ढालुराम वसंदानी दिसम्बर 2003 बुधवार को अमरापुर धाम सिध वो 84 वर्ष के थे। इनका जन्म 30 जनवरी 1 सिन्ध में हुआ था। आप प्रेम प्रकाश मण्डल की में सदैव सेवारत रहे। जीवन पर्यान्त सन्तों के व सेवा कार्य में जुड़े रहे। प्रेम प्रकाश मण्डल सत्साहित्य प्रकाशन में इनका भरपूर योगदान र

18 दिसम्बर को अपनी जीवन यात्रा पूर्ण गुरू महाराज के श्री चरणों में लीन हो गये। दिसम्बर शनिवार के दिन चौथे की बैठक की जिसमें श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के साथ मण्डल भी सम्मलित हुआ।

29 दिसम्बर रविवार को दादाजी के बारहवें कार्यकम हुआ। गुरू महाराज से प्रार्थना है कि ढालूराम वसन्दानी जी को अपने श्री चरणों में स्थान

आगरा साधुबेला के महन्त स्वामी गणपति प्रसाद जी ब्रह

आगरा। (सुको साधुबेलो) सन्त आश्रम के म पूज्य स्वामी गणपति प्रसाद जी महाराज 20 दिस 2002 को वैकुण्ठ धाम सिधारे।

पुर समाचार दर्शन

चाकसू गांव में बही सत्संग गंगा

जन सैलाब उमड़ा–भावभीने स्वागत में डूबे भक्तजन

गुलाबी–नगरी जयपुर से करीब 40 किलो मीटर दूरी पर स्थित एक छोटा गांव चाकसू। जिस गांव गुरू महाराज जी के अनेक श्रद्धालु प्रेमी निवास ते हैं। वहां के प्रेमियों के स्नेहमयी आग्रह पर पूज्य राज श्री ने अपनी संत मण्डली सहित 25 दिसम्बर ार के दिन चाकसू गांव के लिये प्रस्थान किया। प्रेम उल्लास में डूबे चाकसू के श्रद्धालु प्रातः काल ी फूल मालायें लिये प्रतीक्षा में निहार रहे थे। राज श्री के पहुंचते ही बड़े ही उद्घोष के साथ –जयकार की फूल मालायें व बेण्ड बाजों के साथ –शोर से स्वागत कर शोभायात्रा निकाली गई। भग 1 घण्टे की शोभा यात्रा की समाप्ति के पश्चात में स्थित एक विद्यालय में जहां पर सत्संग मंच या गया था। वहां पर सत्संग का आयोजन किया । सर्वप्रथम संत श्री मुक्त जी, भगत मूलचन्द, न भोजराज जी, दादी चेताबाई और सन्त भक्तों ने गुरू महाराज की महिमा का व्याख्यान किया। श्चात परम श्रद्धेय सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी राज ने अपने प्रवचनों में बताया–

न–धीरज धर मन मुहिंजा सतगुरू पार लगाईन्दो
दुख दर्द मिटाईन्दो भव खा पार लगाईन्दो।।

मनुष्य को दुख–सुख में सदैव धीरज रखना हेये। कभी भी दुख में घबराना नहीं चाहिये, न में दुख सुख तो आते रहते हैं। जिसका गुरू में विश्वास होता है। उन्हें किसी प्रकार का नहीं होता। सदैव परमात्म चितंन में मन को ाये रखो।

"प्रभु तोखे पैदा कयड़ो नाम जपण जे वास्ते"

अर्थात् मनुष्य चोले को सार्थक बनाने के लिये व परमात्मा का नाम स्मरण करते रहो तभी मानव न सार्थक होगा। अन्त में पल्लव पाकर सत्संग की समाप्ति की, सभी प्रेमियों ने स्वामी जी को पुनः आने के लिये प्रार्थना की। चाकसू वासियों ने प्रथम बार ऐसा अनोखा आनन्द लूटा।

इस समारोह में 'पूज्य महाराज श्री के साथ श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल, प्रेम प्रकाश भजन मण्डली, सेवा मण्डली एवं महिला मण्डल के कार्यकर्ताओं प्रेमियों ने भी भाग लिया।

अतः में दोपहर 3 बजे पूज्य महाराज श्री संत मण्डली प्रेमियों सहित श्री अमरापुर स्थान जयपुर के लिये प्रस्थान किया। **–रेखा प्रेम प्रकाशी, जयपुर से**

जयपुर में मंशापूर्ण महादेव मन्दिर का स्थापना दिवस मनाया

विशाल शोभायात्रा स्वागत द्वार रंगोली आदि द्वारा महाराज श्री का स्वागत

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी मंशापूर्ण महादेव मंदिर में 28 दिसम्बर रविवार को स्थापना दिवस पर सिन्धी कालोनी (राजापार्क) के प्रेमियों द्वारा विशाल सत्संग समारोह का आयोजन किया गया। सभी भक्तगण गुरू–महाराज जी का दर्शन व सत्संग पाने के लिए बहुत उत्सुक थे। प्रातः 8 बजे से श्री मन्शापूर्ण महादेव मन्दिर में हवन का आयोजन किया गया। प्रातः 10 बजे बर्फखाना मोड़ सद्गुरू टेऊँराम मार्ग" पर पूज्य गुरू महाराज जी व सन्त मण्डली का आगमन हुआ सभी प्रेमीगण गुरू महाराज के इंतजार में पहिले से ही पुष्प मालायें लेकर प्रतीक्षारत थे, सभी भक्तों ने मिलकर पूज्य गुरू महाराज जी को पुष्प मालायें अर्पण कर उनका भव्य स्वागत किया। एक चौपहिया वाहन जो पूरा पुष्पों से शोभित हो रहा था। उसमें पूज्य गुरूमहाराज जी व अन्य सन्तों को बैठाया गया। बर्फखाना मोड़ स्वामी सर्वानन्द पार्क से मन्शापूर्ण महादेव मन्दिर तक विशाल शोभायात्रा

निकाली गयी। आगे–आगे बैण्ड बाजे तथा बीच में हमारे श्री प्रेम–प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूजनीय सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाश महाराज व उनके साथ अनेक सन्तगण सभी चौपहिय़ा वाहन में चल रहे थे। और उनके पीछे मातायें व बहनें प्रेमातुर होकर धुनि लगाती हुई चल रही थीं। पूजनीय गुरू महाराज जी के कर कमलों द्वारा श्री मन्शापूर्ण महादेव मन्दिर में ध्वजा वन्दन किया गया। सैकड़ों श्रद्धालुओं ने इस ध्वजा वन्दन में भाग लिया। सभी प्रेमियों के मुख से ये ही स्वर सुनाई दे रहे थे।

"हम गीत सनातन गाऐंगे नित झण्डा धर्म झुलाऐंगे" तत्पश्चात् अमरापुर की सन्त मण्डली के भजन व सत्संग ने प्रेमियों को आनंदित किया। अन्त में गुरू–महाराज जी ने अपने मधुर वचनों में बताया।

"संत गुरू परमात्मा, सांचे संगी जान
कहे टेऊं इन तीन से करले प्रेम सुजान।।

स्वामी जी ने कहा कि हम रातदिन विषय विकारों में फंसे हुये हैं। हमें एक दिन तो परमात्मा के पास जाना हैं और वह रास्ता बहुत कठिन है उस रास्ते के लिए हमें कुछ सामान लेना है। वह सामान दुनिया की विषय वस्तु नहीं अपितु हमारे धर्म और कर्म ही परलोक के संगी हैं। हम सभी को अपने कर्मो का ही फल मिलेगा। आगे स्वामी जी ने बताया कि–

"आकाश से बादल तो भरपूर बरसता है।
बर्तन जिसका उल्टा, पानी को तरसता है।
मन मोड़ के ममता से, करले प्यार
बाबा टेऊँराम पल में कर देगें बेड़ा पार
ऐ मन मेरे चल तू श्री अमरापुर दरबार
बाबा टेऊंराम पल में कर देगें बेड़ा पार।।

अन्त में स्वामी जी ने "शिवोहम" की धुनि लगाकर सत्संग की समाप्ति की। सभी प्रेमी सत्संग रूपी वर्षा से आनदिंत हुये।

अन्त में पल्लव पाकर सुख–शांति की कामना की।

—माया, प्रेम प्रकाशी
जयपुर से

अब इन्टरनेट पर

प्रेम प्रकाश मण्डल उत्सवों का

जयपुर। श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्या अमरापुर स्थान से प्राप्त जानकारी के चैत्र मेला 2002 हरिद्वार मेला 2002 व महोत्सव (जयपुर अमरापुर धाम) का सीधा इन्टरनेट पर प्रेमियों को उपलब्ध कराया मुम्बई में आयोजित सत्संग सभा का प्रस इन्टरनेट पर उपलब्ध कराया गया। Live देखने के लिये प्रेमियों को yahooMass यूजर आईडी User I.D.-satnam sakhi10 करना होता हैं इसके अतिरिक्त आप प्रेम मण्डल व प्रेम प्रकाश संदेश से सम्बन्धित ज भी इसी website से प्राप्त कर सक इसके लिए web मास्टर श्री प्रदीप चौईथरामानी अपनी सेवायें मण्डल को दे

स्वामी माधवदास जी महाराज की
मूलीबाई का वर्सी उत्सव ब्यावर

ब्यावर– प्रेम प्रकाश आश्रम में ता 20.12. माता श्री मूलीबाई का पुण्य तिथि दिवस भ रामचंद प्यारे भगवानदास, दयाल भाई ने समेत बड़े हर्ष व आनन्द के साथ मनाया, शहर के प्रेमियों ने सत्संग में भाग लेकर प्राप्त किया इस अवसर पर प्रेम प्रकाश आ ट्रस्टी सुन्दरदास नानकराम आदि सभी स हुए, इस अवसर पर संत हरीओमलाल ज ब्यावर पधारे व इस पुण्य तिथि में भाग आदर्शनगर अजमेर से भी ट्रस्टीगण शंकरलाल जी भी पधारे सत्संग का अ कराया गया।

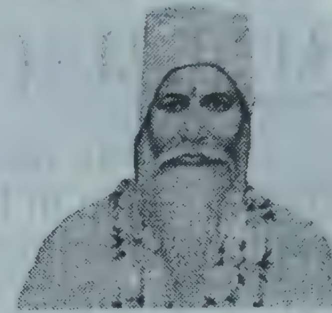
स्वामी रामदास जी महाराज की चौथी पुण्

भावनगर। प्रेमप्रकाश भवन में प्रेमप्रकाश भावनगर द्वारा पूज्यपाद सद्गुरू स्वामी जी महाराज के शिष्य पूज्य स्वामी रामद महाराज का चौथी वर्सी उत्सव 28 दिसम्ब से 1 जनवरी 2003 तक विभिन्न कार्यव आयोजन के साथ मनाया गया।

जयपुर में

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का
82 वाँ चैत्र मेला



15 अप्रैल से 19 अप्रैल 2003 तक

देखो प्रेमी आयके, अमरापुर स्थान।
सन्त समागम पायके, अपना करो कल्यान॥

कलियुग में प्रधान है, सेवा पुनि सत्संग।
कह टेऊँ जिसके किए, होवे भव दुख भंग॥

समस्त सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातन धर्मी श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य योगीराज ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ [illegible]008 आचार्य सद्‌गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज द्वारा स्थापित चैत्र मेला श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्‌गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज जी की अध्यक्षता में सिन्धी तारीख 12 से 16 चैत्र सम्वत् 2060 तदनुसार मंगलवार दिनांक 15 अप्रैल से [illegible]वार 19 अप्रैल 2003 तक भव्य हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। इस महाब्रह्मयज्ञ में प्रेमप्रकाश मण्डल के सब [illegible]वं सारे भारत वर्ष के सन्त महात्मा, विद्वान, कवि, भगत, सद्‌गुरू महाराज के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालेंगे। आप सभी इस महोत्सव में सपरिवार आकर अपने मानव जीवन को कृतार्थ करें।

कार्यक्रम

सोमवार 14 अप्रैल, 2003

स्वामी गुरूमुखदासजी महाराज की 38वीं पुण्य तिथि

मंगलवार 15 अप्रैल, 2003

प्रातः 6 से 8 बजे तक सत्संग, 8 से 10 बजे तक हवन एवं ध्वजावन्दन

सायं 3 बजे शोभायात्रा, 8 से 9 बजे तक सत्संग

बुधवार 16 अप्रेल से शुक्रवार 18 अप्रेल, 2003

प्रातः 6 से 11 बजे तक सत्संग, सायं 3 से 9 बजे तक सत्संग

शनिवार 19 अप्रैल, 2003

प्रातः 4 बजे सत्संग शुरू होगा एवं प्रातः 7 बजे पल्लव पाकर उत्सव का समापन

शोभा यात्रा का मार्ग

श्री अमरापुर स्थान से पोलोविक्ट्री, संसार चन्द्र रोड, चांदपोल बाजार, छोटी चौपड़, बड़ी चौपड़, जौहरी बाजार, सांगानेरी गेट, न्यू गेट, नेहरू बाजार, इन्दिरा बाजार, पांच बत्ती, एम.आई. रोड से पुनः अमरापुर स्थान पर समापन।

नोटः 1. सभी यात्री आवश्यक्तानुसार बिस्तर, ताला, टॉर्च, गिलास जरूर लावें।
2. सोना गहना व कीमती सामान साथ न लावें।
3. कोई भी माता बहिन अपने पिता, भाई या पुरूष रिश्तेदार इत्यादि के सिवा अकेली न आवें।

सेवा में :

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल (ट्रस्ट)
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर-302 001
फोन : 0141-2372423, 24
फैक्स : 2362424

पता:

सद्‌गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज
श्री अमरापुर स्थान,
एम.आई.रोड, जयपुर-302 001

राजपुरा (पंजाब) में संत जयदेव जी का भव्य स्वागत

१६ दिसम्बर २००२ श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के दिल्ली आश्रम के व्यवस्थापक पूज्य स्वामी जयदेव जी महाराज एक लम्बे अन्तराल के पश्चात् दो दिवसीय पंजाब यात्रा पर प्रेम प्रकाश मण्डली दिल्ली एवं पलवल के सदस्यों के साथ १६ दिसम्बर को सड़क मार्ग द्वारा दोपहर लगभग १२ बजे राजपुरा पहुंचे, राजपुरा की सीमा पर स्थानीय प्रेम प्रकाश मण्डली के व्यवस्थापक श्री गुरूदास सचदेवा द्वारा कार्यकर्ताओं व राजपुरा के वरिष्ठ नागरिकों के साथ पूज्य स्वामी जयदेव जी का स्वागत पुष्पवर्षा व पुष्पमालाऐं पहिना कर किया गया तत्पश्चात् सन्त जी को प्रेम प्रकाश मंदिर लाया गया, जहाँ पर पहले से ही बड़ी संख्या में उपस्थिति प्रेमियों ने हर्ष ध्वनि के साथ स्वामीजी का भव्य अभिनन्दन किया। दोपहर बाद राजपुरा से पटियाला पहुंचने पर भी स्वामी जी का पटियाला के प्रेमियों ने प्रसन्नचित्त स्वागत सत्कार किया, हर्षातिरेक में कई प्रेमीजन इस अवसर पर नाच उठे। यहां पर सन्त जयदेवजी महाराज ने प्रेमियों को आचार्य श्री सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन चरित्रात्मक प्रसंग व भजन सुनाकर प्रेरणादायी उपदेश दिये। यहां के प्रेमियों से विदा लेकर रात्रि ७.३० बजे पुनः राजपुरा प्रेम प्रकाश मंदिर में स्वामीजी का आगमन हुआ। यहां पर रात्रि ६.०० बजे से सत्संग समारोह का आयोजन किया गया था। सर्वप्रथम श्री हरिदास संकीर्तन मण्डल राजपुरा द्वारा श्री टोनी चावला एवम् श्री रविकुमार के निर्देशन में सत्संग प्रेमियों को हरिनाम के अमृतमयी रस का आस्वादन कराया गया। इसके बाद स्वामी जी ने अपनी अमृतमयी वाणी से भक्तजनों को मन्त्रमुग्ध करते हुए बताया, कि कर्मों का फल दे हरि, गुरू दे मुक्तिदान।



हमें सत्य कर्म करने चाहिये, प्रभु नाम का सुमरन सदैव करते रहना चाहिये। स्वामीजी ने बताया कि मानव देह तो परमात्मा के पाने हेतु मिली है, हम खाने पीने के लिये नहीं अपितु प्रभु नाम का जाप करने के लिये मानुष देह में आये है। श्वासों रूपी धर्म जो प्रभु ने आपको दिया है उसे ऐसे विषय विकारों में न गंवाओ, हमें वर्तमान के बारे में सोचना चाहिये न कि बीते हुए या आने वाले समय के बारे में। इन दोनों के चक्कर में हम वर्तमान भी गंवा देते है।

१७ दिसम्बर– आज प्रातः से ही प्रेम प्रकाश मंदिर में प्रेमियों के पहुंचने का सिलसिला दोपहर तक जारी रहा। सायं ४ बजे से ६ बजे तक श्री राधा कृष्ण मन्दिर की महिला संकीर्तन मण्डली द्वारा भगवान श्री कृष्ण के भजनों एवं रासलीला का एक शानदार कार्यक्रम पेश किया गया, इस के पश्चात् स्वामी जी ने सत्संग आरम्भ किया जो ७ बजे तक चलता रहा।

रात्रि १० बजे से १२ बजे तक पुनः श्री हरिदास संकीर्तन मण्डल द्वारा भजनों का कार्यक्रम पेश किया तथा इसके पश्चात स्वामी ने सत्संग एवं प्रवचनों द्वारा स्वामी टेऊँरामजी महाराज की जीवन चरित्र पर रोशनी डालते हुए उपस्थित जन समूह को सत्मार्ग पर चलने की भी प्रेरणा दी तथा सिन्धी भजनों की भी स्थानीय लोगों की फरमाईश को पूरा करते हुए सिन्धी भजन बोले जिसे सुनकर उपस्थित श्रोताओं ने खूब आनन्द लिया। लोग १२ बजे रात्रि के पश्चात् भी अपने घरों में नहीं जाना चाहते थे इतना रस एव प्यार भरा वातावरण चल रहा था।

१८ दिसम्बर २००२ को प्रातः ७.३० बजे स्वामी जयदेव जी ने प्रेमियों के साथ दिल्ली के लिए प्रस्थान किया रास्ते में समालखा (हरियाणा) में स्वामीजी ३ घण्टे के लिये श्री हरकेश वाधवा के निवास स्थान पर रूके और इसके पश्चात दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। स्वामी जी के पंजाब यात्रा के समाचार सत्संग पंजाब केसरी, ट्रिब्यून सहित अनेक समाचार पत्रों ने सचित्र प्रकाशित किये।

गुरूदास सचदेवा, राजपुरा पंजाब से

पुस्तक समीक्षा | भजन पुस्तक

गुरू आराधना

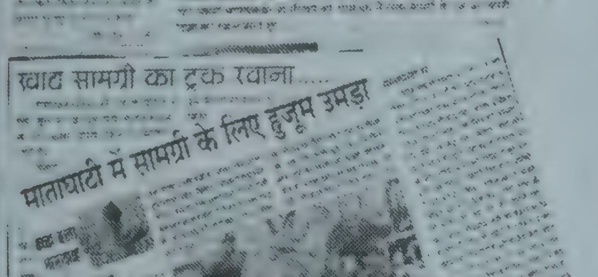
नाम ही के अनुरूप गुरू आराधना अर्थात् गुरू की महिमा का गुणगान करना। हमारे आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज की महिमा का बखान जितना करे उतना कम है, हमारी बुद्धि में इतनी शक्ति नहीं कि हम उनका गुणानुवाद कर सके।

आचार्य श्री की भक्ति यानि सभी देवी-देवताओं की भक्ति। इस गुरू आराधना पुस्तक को बड़े ही आकर्षक आवरण के साथ नवीन संस्करण के रूप में तैयार किया गया है। इस पुस्तक में प्रार्थना- गुरू प्रार्थना चालीसा, १०८ महिमा भजन, शान्ति के दोहे, सोलह शिक्षायें, चारों गुरू महाराज की आरतीयाँ, पल्लव सूची पत्र आदि सम्मिलित किये गये है।

सभी प्रेमियों के लिये "गुरू आराधना" पुस्तक संग्रहणीय है। इस पुस्तक का मूल्य मात्र १५ रु. रखा गया है।

प्राप्ति स्थान :

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर एवम्
सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर भी उपलब्ध है।



पूज्य महाराज श्री द्वारा अकाल पीड़ितों हेतु खाद्य सामग्री के ट्रक भेजे गये

राजस्थान में इस वर्ष बड़ा भारी अकाल पड़ा है अनेक ग्रामीण क्षेत्र में उन्हें भोजन व जल नहीं मिल रहा। चारों और भुख-प्यास से त्राहि-त्राहि मची हुई है। राजस्थान पत्रिका की ओर से अनेक गांवों में भोजन सामग्री भेजी जा रही है। पशुओं के लिये भी चारा उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। चारों ओर अकाल पड़ रहा है। इसी स्थिति को देखते हुये पूज्य सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की प्रेरणा से श्री अमरापुर स्थान जयपुर द्वारा अमरापुर नवयुवक मण्डल, महिला मण्डल प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली, भजन मण्डली, के पुरूषार्थ से अकाल पीड़ित क्षेत्र कोरड़ा गांव उदयपुर में दो ट्रक भोजन सामग्री भेजी गई।

ॐ

श्री सत्‌नाम साक्षी

परम श्रद्धेय सन्त शिरोमणी त्यागी तपस्वी सन्त

स्वामी गणेशानन्द जी महाराज का १०२वां जन्मोत्सव

२६ फरवरी बुधवार से २ मार्च रविवार २००३ तक

निष्कामी निर्मान थे स्वामी गणेशानंद
सरल हृदय मृदु बोल से देते थे आनंद

बिन कारण हित चहत जे दाता दीन दयाल
वन्दन ऐसे सन्त को निरखत करे निहाल

सर्व धर्म प्रेमी महानुभाव सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातन धर्म प्रवर्तक आचार्य सत्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के सन्त मण्डली के वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध त्याग तपोमय स्वरूप पूर्ण वैरागी पूजनीय स्वामी श्री गणेशानंद जी महाराज का १०२ वां जन्मोत्सव दिनांक २६ फरवरी बुधवार से २ मार्च रविवार २००३ तक श्री प्रेमप्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद सद्‌गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता एवं सर्व सन्त मण्डल की उपस्थिति में श्रद्धा भाव युक्त धूमधाम से मनाया जावेगा, इस अवसर पर गुणीजन विद्वान कलाकार भी पधार रहे हैं, आप भी परिवार व इष्ट मित्रों सहित पधारकर ज्ञान अमृत का पान करं अपने मानव जीवन का कल्याण करें।

卐 कार्यक्रम 卐

बुधवार २६ फरवरी २००३

प्रातः ५ बजे संकीर्तन प्रभातफेरी आश्रम से निकाली जावेगी तत्पश्चात् सत्संग होकर श्रीमद्‌भगवद् गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहब का पाठ आरम्भ होगा। सांय ५ बजे से ७.३० बजे तक सत्संग होगा।

गुरूवार, शुक्रवार २७ एवं २८ फरवरी २००३

प्रातः ८ से १० तक सांय ५ बजे से ७.३० तक सत्संग होगा।

शनिवार, १ मार्च २००३

प्रातःकाल ६ से १० तक हवन, ध्वजा वन्दन सत्संग होगा।
सायं ५ से ७.३० बजे तक सत्संग होगा।

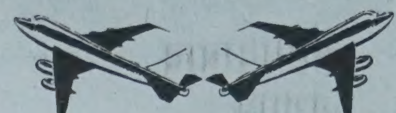
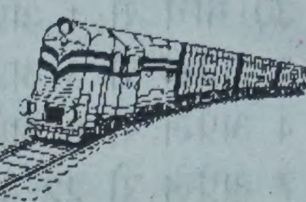
रविवार, २ मार्च २००३

प्रातः ८ से १०.३० बजे तक सत्संग, पाठों का भोग तत्पश्चात् आम भंडारा होगा। सांय ५ से ७.३० बजे तक सत्संग होकर सतगुरू महाराज सन्त मण्डली सहित पल्लव पाकर उत्सव का समापन करेंगे।

आयोजन स्थल :
स्वामी टेऊँराम महाराज
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ
महारूद्र मण्डल स्कूल के पीछे
ग्वालियर (म.प्र.)
फोन : ०७५१-२४२६१११

सेवामें :
सन्त हरीओम
प्रेम प्रकाश आश्रम
ट्रस्ट ग्वालियर

पूज्य स्वामी जी का सत्संग दर्शन ३ व ४ मार्च डबरा ५ मार्च दतिया ६ से ८ मार्च मुरैना आश्रम में होगा।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष

पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

7 जनवरी से 18 जनवरी	2003	तक	रायगढ़	☎ 07762–222353
9 जनवरी से 20 जनवरी	2003	तक	धमतरी	☎ 07722–237007, 235009
1 जनवरी	2003		भानुप्रतापपुर	☎ 07850–252274
2 जनवरी	2003		दल्ली राजहरा	☎ 07748–283076
3 जनवरी	2003		राजनांदगांव	☎ 07744–227716
4 जनवरी	2003		बेमेतरा	☎ 07824–222767, 222375
5 जनवरी से 26 जनवरी	2003	तक	दुर्ग	☎ 0788–2328584
7 जनवरी	2003		यात्रा (दुर्ग से प्रातः गोण्डवाना एक्सप्रेस में, भोपाल, ग्वालियर के रास्ते दिल्ली यात्रा) ☎ 098290–14850	
8 जनवरी से 31 जनवरी	2003	तक	हरिद्वार	☎ 0133–2460144, 2460815
फरवरी	2003		यात्रा, सड़क मार्ग से जयपुर के लिए ☎ 098290–14850	
फरवरी से 5 फरवरी	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372423, 2372424
फरवरी	2003		जयपुर से शाम को चेन्नई एक्सप्रेस में यात्रा ☎ 098290–14850	
फरवरी से 7 फरवरी	2003	तक	कामठी	☎ 098290–14850
फरवरी से 10 फरवरी	2003	तक	सिवनी	☎ 07692–220145, 224752
1 फरवरी से 12 फरवरी	2003	तक	बालाघाट	☎ 07632–242763
3 फरवरी से 16 फरवरी	2003	तक	गोंदिया, तिरोड़ा	☎ 07182–226924
7 फरवरी	2003		भण्डारा	☎ 07184–258257, 254915
8 से 21 फरवरी	2003	तक	नागपुर, अमरावती	☎ 0712–583458, 595830
2 फरवरी	2003		यात्रा नागपुर से चेन्नई एक्सप्रेस में ☎ 098290–14850	
3 फरवरी से 25 फरवरी	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372423, 2372424
6 फरवरी	2003		जयपुर से सड़क मार्ग द्वारा यात्रा ☎ 098290–14850	
6 फरवरी से 2 मार्च	2003	तक	ग्वालियर (स्वामी गणेशानन्द जयंती)	☎ 0751–2426111
मार्च से 4 मार्च	2003	तक	डबरा	☎ 07524–223245
मार्च	2003		दतिया	☎ 07522–236333
मार्च से 8 मार्च	2003	तक	मुरैना	☎ 07532–220280
मार्च से 12 मार्च	2003	तक	आगरा	☎ 0562–2211499
3 मार्च से 14 मार्च	2003	तक	अलीगढ़	☎ 0571–2420591
5 मार्च से 18 मार्च	2003	तक	हरिद्वार	☎ 01334–260144, 260815
9 मार्च	2003		दिल्ली से बरेली एक्सप्रेस में यात्रा ☎ 098290–14850	
0 मार्च से 22 मार्च	2003	तक	गांधीधाम	☎ 02836–211001, 31612
3 मार्च से 24 मार्च	2003	तक	राजकोट	☎ 098290–14850
5 मार्च से 26 मार्च	2003	तक	जामनगर	☎ 098290–14850
7 मार्च	2003		द्वारिका	☎ 098290–14850
8 मार्च	2003		सोमनाथ, जेतपुर	☎ 098290–14850
9 मार्च	2003		भावनगर	☎ 0278–567920, 98252–05783

30 मार्च से 1 अप्रेल	2003	तक	अहमदाबाद	☎ 079–2863900, 286981
2 अप्रेल से 3 अप्रेल	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372423, 23724
4 अप्रेल से 6 अप्रेल	2003	तक	पाली, जोधपुर	☎ 098290–14850
7 अप्रेल से 22 अप्रेल	2003	तक	जयपुर (चैत्र मेला)	☎ 0141–2372423, 23724
23 अप्रेल	2003		देवास	☎ 098290–14850
24 अप्रेल से 29 अप्रेल	2003	तक	इन्दौर (स्वामी मुरलीधर वर्सी)	☎ 0731–2468140, 23001
30 अप्रेल से 1 मई	2003	तक	रतलाम	☎ 07412–240229
2 मई से 8 मई	2003	तक	दिल्ली (स्वामी जयप्रकाश वर्सी)	☎ 011–23969774
9 मई से 10 मई	2003	तक	लखनऊ	☎ 0522–2211901, 22138
11 मई से 16 मई	2003	तक	कानपुर (सद्गुरु हरिदासराम जयन्ती)	☎ 0512–2
17 मई से 19 मई	2003	तक	इलाहाबाद	☎ 0532–2655214
19 मई से 21 मई	2003	तक	वाराणसी, बनारस	☎ 0542–225585
22 मई से 23 मई	2003	तक	फैजाबाद	☎ 05278–246159
24 मई	2003	तक	बइराईच	☎ 098290–14850

तीज त्यौहार

18	जनवरी	2003	शनिवार	श्री सत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत
21	जनवरी	2003	मंगलवार	श्री गणेश चौथ व्रत
26	जनवरी	2003	रविवार	गणतंत्र दिवस
28	जनवरी	2003	मंगलवार	षट्तिला एकादशी व्रत
1	फरवरी	2003	शनिवार	अमावस्या
2	फरवरी	2003	रविवार	चन्द्रदर्शन
6	फरवरी	2003	गुरूवार	चौथ, सद्गुरू टेऊंराम जन्म दिवस (बंसत पंचमी, स्वामी चंदनराम जयंती
12	फरवरी	2003	बुधवार	कुम्भ फाल्गुन संक्राति
13	फरवरी	2003	गुरूवार	जया एकादशी व्रत
16	फरवरी	2003	रविवार	श्री सत्यनारायण, पूर्णिमा व्रत
20	फरवरी	2003	गुरूवार	श्री गणेश चौथ व्रत
27	फरवरी	2003	गुरूवार	विजया एकादशी व्रत

हरिद्वार आश्रम के टेलीफोन नम्बर बदले

प्रेम प्रकाश आश्रम, भोपत वाला, हरिद्वार के टेलीफोन नम्बर परिवर्तित हो गये हैं। अब हरिद्वार का व टेलीफोन नं. इस प्रकार हैं :- 01334 - 260815, 260144 इच्छुक प्रेमी अपनी डायरी में नोट कर लें

करें श्री अमरापुर दर्शन संस्कार चैनल पर 19 जनवरी दोपह

जी हाँ अब आप परम पावन धाम, गुरू स्थल श्री अमरापुर स्थान जयपुर का सम्पूर्ण दर्शन 1 रविवार को दोपहर 3 बजे अपने घर बैठे ही संस्कार चैनल पर करें। 12 जनवरी 2003 रविवार को भ संस्कार चैनल पर श्री अमरापुर दर्शन कार्यक्रम का प्रसारण किया गया।

व्यवहार में विषमता का त्याग

जिनके अच्छे आचरण हों, उन्हें भगवान् भी चाहते हैं कि ऐसा व्यक्ति मेरे धाम में आये। अच्छे आचरण वाले भगवान् के धाम में जाते हैं, अतएव हमें अच्छे आचरण बनाने चाहिये। भगवान् के यहाँ ऐसी व्यवस्था है कि वहाँ बुरे आचरण वाले नहीं जा सकते।

स्त्रियों को चाहिये कि घर में जो विषमता है, उसे दूर करें। लड़का और लड़की में पहले छोटी अवस्था में जब तक लड़के का विवाह नहीं होता है, तब तक लड़के से विशेष प्रेम रहता है और लड़की से कम। जब लड़के का विवाह हो जाता है तो लड़के से प्रेम घटकर विवाहिता लड़की से प्रेम बढ़ जाता है। लड़की को घरवालों से छिपाकर गुप्त रूप से देना बुरी आदत है, अतएव लड़की की अपेक्षा लड़के की बहू पर ज्यादा प्रेम रखना चाहिये, अन्यथा वह बहू लड़के के सामने शिकायत करके लड़के को भी विरूद्ध बना देती है और सारे घर में कलह रहता है। वधू को भी चाहिये कि सास की कोई बात अपने पीहरवालों से नहीं कहे और न पति से ही कहे। यदि माता का प्रेम लड़की पर अधिक रहे और छिप-छिप करके दे तो लड़के और लड़के की बहू ऐसा कहने लगते हैं कि कब यह लड़की अपने ससुराल जाये। पुत्रवधू को चाहिये कि सास और ससुर की सेवा तन, मन से करे। सेवा से उनको मुग्ध कर दे। पिता और पुत्र को भी अपना सुधार करना चाहिये। आपस में प्रेम बढ़ाना चाहिये।

मूक मानवता

एक बार सुरक्षाकोष के लिये कार्यक्रम सम्पन्न करने मेरा पूना जाना हुआ था। वहाँ भाई नारायण सोलंकी ने एक छोटी-सी किंतु मानवताभरी बात वहाँ के एक सज्जन व्यापारी को सुनायी।

पूना में कुछ वर्षों पहले जो बाढ़ आयी थी, उसमें बहुत से घर डूब गये थे। एक गुजराती कुटुम्ब घर नष्ट हो जाने के कारण चौराहे पर आश्रय खोजता छोटे-से बच्चे के साथ खड़ा था।

वहाँ से बहुत लोग निकलते। सभी-क्यों भाई, आप तो बड़ी मुसीबत में आ पड़े? हमारे लायक कोई काम-काज हो तो कहना। ऐसा कहकर मौखिक सहानुभूति दिखाकर आगे बढ़ जाते।

मोटर पर सवार होकर राजनैतिक कार्यकर्ता आये। इन्होंने भी सहानुभूति और आश्वासन के दो शब्द कहकर अपना रास्ता पकड़ा।

किसी ने यह विचार नहीं किया कि बिना घर-बार का बना हुआ यह छोटे से बच्चेवाला कुटुम्ब रात को कहाँ रहेगा? यों सुबह से शाम तक वह कुटुम्ब भूखा-प्यासा रास्ते के चौराहे पर खड़ा रहा। उधर से जिसके साथ आँख की भी जान पहचान नहीं, ऐसे एक राजस्थानी सज्जन निकले। समाचार पूछकर सारी परिस्थिति का अनुमान कर लिया और वे उस कुटुम्ब को अपने घर ले गये। कुछ भी कहे-सुने बिना ही उनके रहने तथा खाने-पीने की सारी व्यवस्था उन्होंने कर दी। सिलाई के काम के लिये एक मशीन भी खरीद दी और उस कुटुम्ब को रोजी कमाने वाला भी बना दिया।

अपने साथ रखकर भाई की तरह उनकी सँभाल रखी और वह भी पूरे एक वर्ष तक। जब वे भाई अपने पैरों पर खड़े रहने योग्य हो गये, तब उन्होंने अलग घर ले लिया और उसमें रहने को चले गये।

इस मूक मानवता का विज्ञापन उन सज्जन ने कभी कहीं भी नहीं किया। न कभी पत्रों में नाम तथा फोटो छपवाये। परंतु जिनकी सेवा-सँभाल की, वे भाई तो उपकारवश इनकी गुण-गाथा गाया ही करते हैं।

-मूलराज अंजारिया

डाक रजि. ग्वालियर संभाग–161 (R.M.S. Posting date 15th & 16th)

भा.शा. रजि. 29/18/81-II

गुरुजनों के वचनों पर श्रद्धा रखनी चाहिये

किसी नगर में ब्रह्मदत्त नामक एक ब्राह्मण रहता था। एक बार कुछ कार्यवश वह दूसरे ग्राम जाने लगा तो उसकी माँ ने कहा- बेटा ! अकेले क्यों जा रहे हो, किसी साथी को साथ ले लो। ब्रह्मदत्त ने उत्तर दिया- माँ ! तुम डरो नहीं, यह रास्ता निर्विघ्न है। साथी की आवश्यकता नहीं है।

माँ उसके इस दृढ़ निश्चय को जानकर पास की बावली से एक कर्कटक (केकड़े) को पकड़ लायी और उसे देते हुए बोली-वत्स ! यदि तुम्हारा वहाँ जाना आवश्यक है ही तो इस केकड़े को ही साथ ले लो। यह तुम्हारा सहायक होगा। पहले तो ब्रह्मदत्त को केकड़े को साथ ले जाना अच्छा नहीं लगा, वह सोचने लगा यह मेरी क्या सहायता कर सकता है ? लेकिन फिर माँ की बात को आज्ञा रूप मानकर उसने केकड़े को एक कपूर की डिबिया में रखकर अपने झोले में डाल लिया और अपने गन्तव्य की ओर चल पड़ा।

कुछ दूर जाने के बाद गरमी और धूप से व्याकुल हो वह एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने लगा। वृक्ष की शीतल छाया में शीघ्र ही उसे नींद भी आ गयी। उस वृक्ष के खोखले में एक सर्प का निवास था। ब्रह्मदत्त को सोता देख वह उसे डँसने के लिये कोटर से बाहर निकला, पर कपूर की सुगन्ध से आकृष्ट हो वह झोले में रखी डिबिया को निगलने लगा। सर्प के दन्त प्रहार से डिबिया टूट गयी और उसमें से निकलकर केकड़े ने साँप को अपने तीखे नाखूनों से विदीर्ण कर डाला। इस प्रकार साँप को अपनी दुष्टता का फल मिल गया।

उधर नींद खुलने पर ब्रह्मदत्त ने देखा कि पास में ही एक साँप मरा पड़ा है। उसके मुँह में डिबिया देखकर वह समझ गया कि इसे केकड़े ने ही मारा है। वह सोचने लगा कि माँ की आज्ञा को श्रद्धापूर्वक मान लेने के कारण आज मेरे प्राणों की रक्षा हो गयी, अन्यथा यह सर्प मुझे जिन्दा न छोड़ता।

माता, पिता, गुरू तथा श्रेष्ठजन- सभी पूज्य तथा वन्द्य हैं, आदरणीय हैं, उनकी कल्याणकारिणी आज्ञा बिना विचार मान्य है, उनमें भी माता का स्थान सर्पोपरि है- इसीलिये उसे 'अतिगुरु' कहा गया है। अतः माता आदि के वचनों को आज्ञारूप समझकर मानना चाहिये, इससे कल्याण ही होता है। नीतिशास्त्र में भी कहा गया है-

मन्त्रे तीर्थे द्विजे दैवे दैवज्ञे भेषजे गुरौ। यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।।

अर्थात् मन्त्र की साधना में, तीर्थयात्रा एवं तीर्थस्थान में, ब्राह्मणों की सेवा आदि में, देवताओं के विषय में, ज्योतिषियों में औषधियों तथा गुरु में जिस व्यक्ति की जैसी श्रद्धा होती है, उसके अनुसार ही उसे फल मिलता है।

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों [illegible] सूचनार्थ उनके प्रेषण पते [illegible] ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवा[illegible] [illegible]ी हुई है, कृपया उसे अच्छी तरह देख कर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहले ही अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए।

★ व्यवस्थापक

RH 4832-15060-7/2004
श्री किशनचंद बूटानी
ई-19, मधुबन कॉलोनी, नाका मदार,
अजमेर, राजस्थान

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा ओमनी व प्रिन्ट लेजर कॉम से सज्जा करवाकर ओंकार ऑफसेट, दौलतगंज, से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ लश्कर, ग्वा. से प्रकाशित किया गया। सम्पादक : शंकरलाल सबनानी, फोन : 2327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 2454183